नवम्बर 2023

दादावाणी

Retail Price ₹ 20

अमरेली में
परम पूज्य दादा भगवान का 116 वाँ जन्मजयंती महोत्सव
ता. 22 से 26 नवम्बर 2023

अडालज : पर्युषण पारायण : ता. 12 से 19 सितम्बर 2023

पूज्यश्री दीपकभाई का दुबई - केन्या सत्संग प्रवास

दुबई : शिविर - सत्संग - ज्ञानविधि : ता. 23 से 29 सितम्बर 2023

वर्ष : 19 अंक : 1
अखंड क्रमांक : 217
नवम्बर 2023
पृष्ठ - 28

Editor : Dimple Mehta
© 2023
Dada Bhagwan Foundation
All Rights Reserved.
Printed & Published by
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

Printed at
Amba Multiprint
Opp. H B Kapadiya New High School, At-Chhatral, Tal: Kalol, Dist. Gandhinagar - 382729

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

संपर्क सूत्र :
त्रिमंदिर, सीमंधर सिटी,
अहमदावाद-कलोल हाइ-वे,
पो.ओ.: **अडालज**,
जि.: गांधीनगर-382421.
फोन : 9328661166-77
email: dadavani@dadabhagwan.org
www.dadabhagwan.org
दादावाणी संबंधी शिकायत के लिए:
+91 8155007500

सबस्क्रिप्शन (सदस्यता शुल्क)
5 साल
भारत : 1000 रुपये
वार्षिक
भारत : 200 रुपये
भारत में D.D./M.O.
'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम से संपर्कसूत्र के पते पर भेजें।

दादावाणी

प्रत्यक्ष दादा भगवान की अनन्य कीर्तनभक्ति

संपादकीय

अक्रम मार्ग में खुद का आत्मा जानने के बाद, भक्ति खुद के स्वरूप की ही करनी होती है, वही मोक्ष की भक्ति है! जब तक आपका आत्मा संपूर्ण व्यक्त नहीं हुआ, तब तक 'ज्ञानी पुरुष', वे ही आपका आत्मा हैं। 'ज्ञानी पुरुष' की भक्ति, वह खुद के आत्मा की ही भक्ति है। ज्ञानी पुरुष, वे देहधारी परमात्मा हैं। अब उनमें प्रकट हुए आत्मा यानी दादा भगवान, उनके असीम जय जयकार बोलना, वह कीर्तनभक्ति है।

परम पूज्य दादाश्री हमेशा कहते थे कि ये जो दिखाई देते हैं, वे तो 'ए.एम. पटेल' हैं और जो दादा भगवान भीतर प्रकट हुए हैं, वे खुद चौदह लोक के नाथ हैं। वे तीन सौ साठ डिग्री वाले अंदर संपूर्ण दशा में हैं और मैं तीन सौ छप्पन डिग्री वाला ज्ञानी पुरुष हूँ। यहाँ तो जैसे आप भक्त हो वैसा ही मैं भी भक्त हूँ। आपके भीतर वे ही दादा भगवान हैं, आप इन दादा भगवान के असीम जय जयकार की कीर्तनभक्ति करो उतने आपके भीतर वाले भगवान प्रकट होते जाएँगे। 'दादा भगवान के असीम जय जयकार हो', बोलोगे न, तो वह प्रत्यक्ष परमात्मा की कीर्तनभक्ति है। खुद को उस रूप होने के लिए यह प्रत्यक्ष दादा भगवान की सीधी-डिरेक्ट कीर्तनभक्ति है।

प्रस्तुत अंक में, दादा भगवान की कीर्तनभक्ति पर विशेषरूप से विश्लेषण हुआ है। कीर्तनभक्ति किसे कहते हैं, किस की भक्ति करनी है, वह करने के पीछे का आशय, किस तरह करनी है, उसकी फल प्राप्ति क्या है, वगैरह। अनंत जन्मों से हृदय में जो घाव पड़े हैं, उन घावों को भरने का कोई रास्ता ही नहीं है। यह एक ही वाक्य 'दादा भगवान के असीम जय जयकार हो' बोलने से भीतर के सभी घाव भरते जाएँगे। इससे तो आत्मा के आनंद की शुरूआत होती है। एक घंटा कीर्तनभक्ति हो, वहाँ पर दादा भगवान के दर्शन भी होते हैं और जो माँगो वह मिले, ऐसा है। परंतु भौतिक मत माँगना। भौतिक का परिणाम भटकने का आएगा। उनके पास तो हमेशा का आत्मा का शाश्वत सुख ढूँढना।

ये पुस्तकें, आप्तवाणी बाहर (छपकर) आएगी तब लोग इन्हें पढ़ेंगे और जानेंगे कि ये दादा कितने अद्‌भुत हैं! इस जगत् में कीर्तन करने योग्य पुरुष होते ही नहीं हैं। और यदि उनका कीर्तन करें, तब तो कल्याण हो जाता है। कीर्तन यानी वह करते हुए तो दादा दादा हो जाता है, दादा का रंग लग जाता है। यह तो अक्रम विज्ञान है। इसलिए 'दादा' की अनन्य भक्ति अपने आप रहती है, वर्ना इस काल में अनन्य भक्ति नहीं रहती न! ये दादा भगवान वे तो सर्वश्रेष्ठ संपूर्ण शुद्ध अवतार हैं! हम उनके कीर्तन गाएँ तो उनकी शक्ति हममें उत्पन्न होती है, ऐसा नियम है। जिनकी हम भक्ति करते हैं, उस रूप हम होते जाते हैं।

- जय सच्चिदानंद

प्रत्यक्ष दादा भगवान की अनन्य कीर्तनभक्ति

'दादावाणी' सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलत: गुजराती 'दादावाणी' का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेज़ी शब्द का अर्थ हैं अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश है। यहाँ पर 'आत्मा' शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। जहाँ पर भी 'चंदूभाई' नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर पाठक खुद को समझें। 'दादावाणी' के इस अंक में अगर आप कोई बात न समझ पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधारकर समाधान प्राप्त करें। अनुवाद में कोई कमी नज़र आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें, ताकि भविष्य में सुधार किया जा सकें। ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी है।

भक्ति की समझ, ज्ञानी की दृष्टि से

प्रश्नकर्ता : ऐसा कहा जाता है कि भक्ति, वह सर्वोत्तम मार्ग है और वह मोक्ष करवा दे, ऐसी चीज़ है, तो वह कौन सी भक्ति है?

दादाश्री : ऐसा है न, भक्ति तो जब तक आत्मा प्राप्त नहीं होता, समकित नहीं होता, तब तक मोक्ष की भक्ति नहीं होती। समकित होने के बाद, आत्मा प्राप्त होने के बाद जो भक्ति होती है, वह सारी मोक्ष की भक्ति! उसके बाद आत्मा के ही गुन गाते हैं न! कीर्तन सारे आत्मा के ही करते हैं न! देह के कीर्तन बंद हो जाते हैं, गुरु के कीर्तन बंद हो जाते हैं, बाकी सभी कीर्तन बंद हो जाते हैं। क्योंकि वह सब *पुद्गल* (अहंकार) है। आत्मा का ही कीर्तन होना चाहिए।

यानी अज्ञान भक्ति कब तक है? जब तक आत्मदर्शन नहीं होता तब तक सारी अज्ञान भक्ति कही जाती है।

प्रश्नकर्ता : परंतु वह बंधनकर्ता तो है ही न, मोक्षमार्ग के लिए?

दादाश्री : सारा ही बंधन! बंधन यानी भक्ति करने से पुण्य मिलता है और भक्ति के विरुद्ध करने से पाप मिलता है। मोक्षमार्ग में आने के बाद तो पुण्य और पाप दोनों नहीं रहते। उसके बाद की वास्तविक भक्ति वहाँ पर होती है। वास्तविक भक्ति तो किसे कहते हैं कि जिनकी भजना करें, वह भजना कम नहीं होती। अविरत भजना, वह वास्तविक भक्ति कही जाती है और वह भक्ति मोक्ष देती है।

लोग भक्ति को लौकिक में ले जाते हैं। भजन को भक्ति कहते हैं। भक्ति, ज्ञान के बिना नहीं हो सकती। भक्ति उसी रूप बना देती है, जिनकी भक्ति करें उसी रूप! 'ज्ञान' रहित भक्ति, वह संसार के भौतिक सुख देती है और 'ज्ञान' सहित भक्ति, वह 'ज्ञान' कहलाती है, वह मोक्ष फल देती है।

अक्रम मार्ग में पराभक्ति

प्रश्नकर्ता : भक्तिमार्ग से मोक्ष है या ज्ञानमार्ग से मोक्ष है?

दादाश्री : भक्तिमार्ग को आप क्या समझें? ज्ञानमार्ग शुरू होने के बाद भक्ति आती है। कोई स्टेशन का रास्ता दिखाए, फिर आप चलोगे न? रास्ते का ज्ञान होने के बाद उस रास्ते पर चलना, वह भक्ति है। भक्ति शब्द का वास्तविक अर्थ क्या है? उस शब्द के अंदर आश्रय समा जाता है। इन सभी को ज्ञान दिया है, वे सभी भक्तिमार्ग में भी हैं। जिनका आश्रय लिया उनकी भक्ति करनी है।

प्रश्नकर्ता : अर्थात् भक्तिमार्ग भी अक्रममार्ग में है?

दादाश्री : 'यह' पराभक्ति है। अक्रममार्ग में आत्मा प्राप्त कर लेने के बाद जो भक्ति करते हैं, वे खुद अपने आप की ही भक्ति करते हैं।

ये (फूलों की) माला बनाते हैं, वे भी खुद की ही भक्ति करते हैं, फिर भले ही वह माला हमें चढ़ाएँ!

'ज्ञानी पुरुष' की भक्ति वह खुद के आत्मा की ही भक्ति है। जब तक आपका आत्मा संपूर्ण व्यक्त नहीं हुआ, तब तक 'ज्ञानी पुरुष' वे ही आपका आत्मा है। 'ज्ञानी पुरुष' शल्य रहित होते हैं। खुद प्रसन्नचित्त वाले होने के कारण, सामने वाले को भी उन प्रसन्नचित्त के दर्शन करने से ही आनंद प्रकट होता है। 'ज्ञानी' के दर्शन मात्र से अनेक जन्मों के पाप भस्मीभूत हो जाते हैं!

पूरा जगत् भक्ति ढूँढ रहा है, वह अपराभक्ति है। जिस भक्ति में थोड़ा-सा भी बुद्धि का प्रवेश नहीं हो, वह मोक्ष की भक्ति कहलाती है। भक्ति मोक्ष की होनी चाहिए। बुद्धि का प्रवेश हो, तो वह अपराभक्ति होती है। बुद्धि बाहर निकल गई, तो पराभक्ति है। 'यहाँ' पर पूरे दिन जो चलती है, वह पराभक्ति है। पराभक्ति का फल मोक्ष है। अपना तो यह मोक्षमार्ग है।

जहाँ मोक्षमार्ग नहीं है, वहाँ संसार मार्ग है। जिस भक्ति में बुद्धि आती है, तब वह 'इमोशनल' रखती है, 'मैं'पन का भान करवाती है, 'रिलेटिव' स्वरूप का भान करवाती है, 'मैं चंदूलाल हूँ, मैं लोहे का बड़ा व्यापारी हूँ', वैसा भान करवाती है। बुद्धि पराभक्ति नहीं होने देती। यहाँ तो ज्ञान देने के बाद फिर पराभक्ति ही होती है। पराभक्ति तो किसे कहते हैं कि जो आत्मा के लिए की जाए, शुद्धात्मा के लिए, आत्महेतु के लिए की जाए, वह। आत्महेतु के लिए जागे-वह नींद कहलाती है। आत्महेतु के लिए खाए-वह उपवास और आत्महेतु के लिए भक्ति करे, वह पराभक्ति है।

भक्ति अर्थात् अभी यहाँ ये महात्मा 'ज्ञानी पुरुष' की भक्ति करते हैं-वह, यानी क्या कि 'ज्ञानी पुरुष' के प्रति 'परम विनय' में रहते हैं, उनका *राजीपा* (ज्ञानी की प्रसन्नता) प्राप्त करना, उसी को कहते हैं भक्ति।

यहाँ पर ये सब अभी मुक्ति नहीं ढूँढ रहे हैं, इन्हें ऐसा लगता है कि बस अब 'ज्ञानी पुरुष' की ही भक्ति करनी है। मुक्ति तो हमने इन्हें एक घंटे में ही दे दी है।

मुक्ति तो दी जा चुकी है, तो अब क्या रहा? भक्ति रही। यह 'अक्रम मार्ग' है, जगत् का 'क्रमिक मार्ग' है। क्रमिक मार्ग अर्थात् पहले भक्ति और फिर मुक्ति और 'इस' अक्रम मार्ग में पहले मुक्ति, फिर भक्ति! अभी तो ये लोग मुक्ति लिए बिना भक्ति करने जाएँ तो भक्ति रहेगी ही नहीं न! अंदर हज़ारों प्रकार की चिंताएँ, *उपाधियाँ* रहती हों तो फिर भक्ति कैसे रह पाएगी? और अगर मुक्ति पहले प्राप्त कर ली हो तो, ये सब चैन से बैठे हैं न, यहाँ पर ये सब बैठे हैं वैसे बैठना होता है! ये सब ऐसे चैन से (पालथी) लगाकर क्यों बैठे हैं? क्योंकि, जैसे यहाँ से उठना ही नहीं हो, इसलिए। मुक्ति है इनके पास इसलिए!

भक्ति से आवरण टूट जाते हैं और अधिक दिखाई देता है। खुद 'किसकी भक्ति करता है' इस पर आधारित है। जिन्हें चेतन प्राप्त हुआ है, ऐसे पुरुष की 'ज्ञानी पुरुष' की भक्ति करने से चेतन प्राप्त होता है। चेतन की भक्ति अर्थात् चेतन प्राप्त होने के बाद ही चेतन की भक्ति हो सकती है।

भक्ति : क्रमिक में - अक्रम में

प्रश्नकर्ता : अक्रम मार्ग में भक्ति का स्थान कहाँ आता है?

दादाश्री : अक्रम मार्ग में खुद का आत्मा जानने के बाद, आत्मस्वरूप की सभानता उत्पन्न

होने के बाद, भक्ति खुद के स्वरूप की ही होती है। जिसे रमणता कहते हैं। और अन्य लोगों को समझना हो तो भक्ति भी कह सकते हैं। अत: खुद के स्वरूप की रमणता या भक्ति कहो, वह खुद के स्वरूप की ही है।

प्रश्नकर्ता : यानी स्वरूप की रमणता, वही स्वरूप की भक्ति है न?

दादाश्री : हाँ, यदि भक्ति शब्द कहना हो तो स्वरूप की भक्ति कहा जा सकता है, वर्ना खुद, खुद की ही रमणता में है। पुरुष होने के बाद में अन्य कोई अवलंबन नहीं रहा न!

प्रश्नकर्ता : पुरुष होने के बाद भक्ति का स्वरूप कैसा होता है?

दादाश्री : पुरुष होने के बाद खुद, खुद की ही रमणता में है। और कोई भी रमणता, भक्ति है ही नहीं।

प्रश्नकर्ता : यानी कि क्रमिक मार्ग में पहले भक्ति और बाद में मुक्ति और अक्रम में पहले मुक्ति और बाद में भक्ति?

दादाश्री : ऐसा है, पहले हमने क्रमिक मार्ग निकाला था। सभी जो सुनने आते थे न, वे सभी अपना टाइम बिगाड़कर, अपने घर के तगाड़ी-पावड़े लेकर नींव खोदते थे। लेकिन फिर वह घर की चिंता-*उपाधि* होती हैं न, वह परेशान करती है या नहीं करती? अब, उस चिंता-*उपाधि* में नींव खोदें तो उसमें क्या बरकत आएगी? तो फिर दो-चार दिनों के बाद वापस नहीं आते थे। ये इनके जैसे दो-चार लोग आते रहते थे। बाकी के फिर से वापस नहीं आते थे। इतनी अधिक *उपाधि* में व्यक्ति कैसे आएगा? यानी वह क्रमिक मार्ग की भक्ति थी! पहले वह भक्ति करो और बाद में मुक्ति होगी। परंतु किसकी भक्ति? ज्ञानभक्ति, उसमें तो ज्ञानी की भक्ति, ज्ञान की भक्ति, भगवान की भक्ति, वह सब करो, उसके बाद मुक्ति होती है।

और इस अक्रम में पहले मुक्ति, यानी क्या कि चिंता पहले बंद हो जाती है। उसके बाद अब अपने आप हमारी आज्ञा अनुसार सब करते रहो। जब तक चिंता हो तब तक व्यक्ति कुछ भी नहीं कर सकता। आपके अनुभव में आ गई न, बात? और चिंता बंद हो जाए और वे सब आर्तध्यान-रौद्रध्यान बंद हो जाए, इससे स्थिरता रहती है। इसलिए सभी कुछ कर सकते हैं। चिंता हो तो स्थिरता नहीं रहती, उसके कोई कार्य नहीं होते। इससे (अक्रम से) पहले स्थिरता रहती है और फिर कार्य होते हैं।

प्रश्नकर्ता : फिर संसार में रहकर भी भक्ति कर सकते हैं न?

दादाश्री : हाँ, संसार में रहकर भक्ति कर सकते हैं, भक्ति अच्छी तरह से कर सकते हैं। आपको ऐसी भक्ति करनी हो तो आपको भी सब बताऊँ, क्या-क्या करना है वह। यानी यहाँ आओगे तो आपको भगवान की भक्ति करना बताएँगे। किस प्रकार से भक्ति करनी है, क्या ध्यान करें, वह सब बताएँगे। वह बताते हैं तभी तो 'इन' सभी में इतनी अधिक शक्ति उत्पन्न होती हैं। इसलिए फिर मरने का भय नहीं रहता, भगवान *ऊपरी* भी नहीं रहते। भगवान दिन भर उनके साथ बातचीत करते रहते हैं।

कीर्तनभक्ति बनाए तद्रूप

प्रश्नकर्ता : नौ प्रकार की भक्ति का वर्णन किया है, तो अक्रम विज्ञान में किस प्रकर की भक्ति है?

दादाश्री : सभी प्रकार की भक्ति, वह नवधा

भक्ति इसमें आ जाती है। उसमें से कुछ दो-तीन प्रकार की भक्ति अधिक होगी। कीर्तनभक्ति, फिर सखा भक्ति और फिर दास भक्ति भी होगी। ये तीन-चार भक्ति इसमें बहुत होगी।

अब, नवधा भक्ति तो भगवान मिलने पर ही होती है। भगवान प्रत्यक्ष हो तो नवधा भक्ति होती है। यानी नवधा भक्ति किसकी होती है? कृष्ण भगवान जैसे पुरुष उपस्थित हों तो उनकी नवधा भक्ति होती हैं। इसमें सखा भक्ति होती है, दास भक्ति होती है। हमारी दास भक्ति ये सभी करते हैं, परंतु हमारी सखा भक्ति तो कभी ही कोई करता है। लेकिन हमारी कीर्तनभक्ति सभी बहुत करते हैं। हमारी कीर्तनभक्ति से बहुत लाभ हो जाए, ऐसा है।

जिनका आप कीर्तन करो न, उनकी शक्ति उत्पन्न होती है, ऐसा नियम है। ये दादा भगवान, वे सर्वश्रेष्ठ संपूर्ण शुद्ध अवतार हैं! अब, उनके कीर्तन गाने से कैसी दशा होगी? खुद उस रूप हो जाएँगे। कीर्तनभक्ति का अर्थ क्या है? जिनकी आप भक्ति करो उस रूप आप होते जाएँगे।

इसी तरह, इस संसार व्यवहार में भी आप जिनके कीर्तन करते हैं न, उस रूप आप हो जाते हैं। किसी व्यक्ति का थोड़ा सा कीर्तन करें न, तो उनमें जो शक्तियाँ हैं, वे आपमें उत्पन्न होने लगती है। कोई सट्टेबाज व्यक्ति के बारे में आप कहो कि 'ये व्यक्ति बहुत होशियार हैं और ऐसा है, वैसा है' तो आपमें उसके गुण उत्पन्न होने लगते हैं और कोई धर्मिष्ठ व्यक्ति हो, उनका कीर्तन करो तो उस रूप आप होने लगते हैं, बस! ये नियम हैं सभी।

यानी यह कीर्तनभक्ति एक ऐसी है कि कुछ न करे तब भी चलेगा। दादा की कीर्तनभक्ति करें और 'दादा के बारे में कहते रहें न, कि हमारे दादा ऐसे हैं और वैसे हैं...' तो 'दादा' जैसे ही हो जाएँगे। आप जैसा समझे हो वैसा, जितना आपको समझ में आया उतना। एक्सेस (ज़्यादा) नहीं बोलना चाहिए, वर्ना, सामने वाला बिल्कुल माइनस कर देगा। जितना आपके अनुभव में आया हो उतना ही बोलना चाहिए। सामने वाला माइन्स कर दे, ज़्यादा बोले, तो फिर उसे कीर्तनभक्ति नहीं कहेंगे। कीर्तनभक्ति तो, आपके अनुभव में आया हो और सामने वाले को लाभ हो, ऐसी बात होनी चाहिए।

और 'दादा का ज्ञान खराब है, ऐसा है, वैसा है' ऐसा बोलने से फिर (वह) पत्थर जैसा भी हो जाएगा! क्योंकि जिनका सीधा बोलने से इतने आगे के स्टेशन पर आ सकते हैं, तो उल्टा बोलने से उतने ही स्टेशन वापस नीचे उतर सकते हैं, उतने ही नीचे फेंक दें। कोई उल्टा बोलें तब भी हमें कोई हर्ज़ नहीं है। हमें इतना ही होता है कि तू जहाँ गिरेगा वहाँ से निकलेगा कैसे? इसलिए हम उपाय करते हैं ताकि वह गिरे नहीं। समझपूर्वक कोई उल्टा नहीं करता। ये सभी समझदारी से ज़ोखिमदारी लेते होंगे? नासमझी वाले ही करते हैं। समझ वाला ज़ोखिमदारी नहीं लेता, नासमझी वाला ज़ोखिमदारी लेता है।

'दादा भगवान के असीम जय जयकार हो' बोले न, तो वह प्रत्यक्ष परमात्मा की कीर्तनभक्ति है। जो दादा भगवान चौदह लोक के नाथ हैं, जो भीतर प्रकट हुए हैं, उन प्रत्यक्ष परमात्मा की कीर्तनभक्ति है। ऐसी कीर्तनभक्ति हुई ही नहीं न! अत: यह ऐसा फल देती है कि बात मत पूछो! यानी 'दादा' की कीर्तनभक्ति वह सबसे बड़ी भक्ति है। कीर्तनभक्ति से किसी भी नियम का पालन किए बगैर उस रूप हो सकते हैं। कीर्तनभक्ति करते हैं न, वह बहुत बड़ी भक्ति कही जाती है।

नहीं है यह मंत्र, स्तुति, वंदना या धुन

प्रश्नकर्ता : 'दादा भगवान के असीम जय जयकार हो', इसे मंत्र कह सकते हैं?

दादाश्री : नहीं है यह मंत्र। मंत्र तो मन को तर करता है और यह कोई मन को तर नहीं करता।

मंदिर में जाए और वहाँ आज खुद भगवान आए हों तो वहाँ हम भगवान से कहें कि 'अहो, अहो! आपके असीम जय जयकार हो, असीम जय जयकार हो'। यह क्या मंत्र कहलाता है? यह एक प्रकार का अहोभाव है। उसके जैसा है यह। अहोभाव प्रदर्शित करना है। और उस समय जो फल मिलता है वह फल सीधा ही मिलता है आपको।

प्रश्नकर्ता : तो यह स्तुति है या वंदना है?

दादाश्री : यह स्तुति भी नहीं है और वंदना भी नहीं है। स्तुति तो ये बाहर, मंदिर में मूर्ति की जाती हैं। और धुन तो है ही नहीं।

प्रश्नकर्ता : लेकिन यह धुन तो है न ?

दादाश्री : यह धुन भी नहीं है। धुन किसे कहते हैं? धुन कौन कर सकता है? जो धुनी हो वह धुन कर सकता है। आप धुनी नहीं हो। धुनी यानी क्या? एक ही तरफ चिपक गया, बाकी सब नहीं सोचता। धुन में और धुन में ही रहता है, उसे धुनी कहते हैं। जबकि आप तो यह सावधानीपूर्वक बोलते हो। धुन सजगता में नहीं होती, असजगता में होती है।

धुन हमेशा मन से होती है और ये 'असीम जय जयकार' बोलते समय मन एक तरफ बैठा रहता है, मन नहीं बोलता।

प्रश्नकर्ता : इसमें यहाँ कौन बोलता है?

दादाश्री : यह तो टेपरिकॉर्ड बोलती है। परंतु यह प्रेरणा किसकी है? यह प्रज्ञा की है। धुन तो, जहाँ मन है वहाँ धुन है! इस अक्रम मार्ग में मन बीच रास्ते में है ही नहीं न! धुनी यानी आधा पागल! फूल (पूरा) पागल नहीं कहलाएगा। सभी लोग कहते हैं, 'जाने दो न, यह धुनी है'। धुनी भान रहित होते हैं। यानी धुनी तो सजग नहीं होते, आप सजग हो। इसलिए इस पर धुन शब्द लागू नहीं होता, जाप भी लागू नहीं होता, मंत्र भी लागू नहीं होता।

आस्वादन अमृतरस के

प्रश्नकर्ता : 'दादा भगवान के असीम जय जयकार हो' यह मंत्र नहीं, जाप नहीं, धुन नहीं, तो क्या है यह? इसे कुछ तो कहना पड़ेगा न?

दादाश्री : यों तो व्यवहार में इसे वाक्य कहते हैं, परंतु इस काल की यह एक आश्चर्यजनक चीज़ है।

प्रश्नकर्ता : तो इससे क्या लाभ होता है?

दादाश्री : अंदर अमृतबिंदु टपकते हैं! ऐसी कोई भी चीज़ नहीं है कि जिससे अंदर अमृतबिंदु टपके। आठ मिनट से ज़्यादा समय तक बोलते ही अमृतबिंदु टपकना शुरू हो जाता है। आठ मिनट बोलने तक तो आनंद रहता है और फिर तो अमृतबिंदु टपकने की शुरूआत हो जाती है। यानी यह तो सीधा अमृत ही है, अमृतरस है एक प्रकार का! और मनुष्य का काम (मोक्ष का) हो जाता है। इस काल में यह उत्पन्न हुआ है, इसलिए हम कह देते हैं कि इतना करना।

यानी यह तो कीर्तनभक्ति है और कीर्तनभक्ति शब्द भी छोटा पड़ता है इसके लिए, परंतु अन्य कोई शब्द नहीं मिला इसलिए यह रखा है।

तार जॉइन्ट हो जाए, वह है कीर्तनभक्ति

प्रश्नकर्ता : कीर्तन और कीर्तनभक्ति में क्या फर्क है?

दादाश्री : कीर्तन तो बाहर ये सभी गाते ही हैं न? कीर्तन गाना, वह अलग है?

प्रश्नकर्ता : कीर्तन के बारे में थोड़ा ज़्यादा स्पष्ट कीजिए, ख्याल नहीं आता।

दादाश्री : यह 'जय जयकार हो' बोलते हैं, उसे कीर्तन भी नहीं कह सकते, परंतु कीर्तनभक्ति है। जगत् में सबसे बड़ी कोई चीज़ है तो वह है कीर्तनभक्ति! कीर्तनभक्ति करना यानी कि, तार जोइन्ट करेंगे तभी लाइट होगी न! कीर्तनभक्ति में तो नाममात्र भी मेहनत नहीं है! कीर्तनभक्ति से तो ग़जब की शक्ति बढ़ती है!

खुद की भक्ति करने वाली प्रज्ञाशक्ति

प्रश्नकर्ता : यह किसकी कीर्तनभक्ति है?

दादाश्री : यह कीर्तनभक्ति खुद चौदह लोक के नाथ की है।

प्रश्नकर्ता : खुद की कीर्तनभक्ति करने वाला कौन?

दादाश्री : खुद ही, खुद!

प्रश्नकर्ता : वह कौन-सा भाग है?

दादाश्री : वह प्रज्ञाशक्ति है, वह काम कर रही है!

ज्ञानी में प्रकट हुए दादा की कीर्तनभक्ति

प्रज्ञा नामक शक्ति 'ज्ञान' से उत्पन्न होती है! हम 'शुद्धात्मा' देते हैं तब आपके भीतर प्रज्ञा को बैठा देते हैं। जिन्हें हम 'शुद्धात्मा' कहते हैं, वही वे 'खुद' भगवान हैं, उनकी ही कीर्तनभक्ति है। आपका शुद्धात्मा जब तक प्रकट नहीं हो जाता, स्पष्टवेदन नहीं हो जाता, तब तक कृपालुदेव ने क्या कहा है कि ज्ञानी पुरुष का आत्मा वही अपना आत्मा है।

'ज्ञानी पुरुष' की भक्ति में सब से उच्च कीर्तनभक्ति है। कीर्तनभक्ति कब उत्पन्न होती है? कभी भी अपकीर्ति का विचार नहीं आए, भले ही कितना भी उल्टा हो तो भी सीधा ही दिखे। जबकि 'ज्ञानी पुरुष' में उल्टा होता ही नहीं। और ज्ञानी पुरुष वे देहधारी परमात्मा हैं। अब उनमें प्रकट हुए आत्मा 'दादा भगवान', उनके असीम जय जयकार करें, वह कीर्तनभक्ति है, इसलिए तुरंत फल मिलता है।

ए.एम.पटेल : मैं : दादा भगवान

प्रश्नकर्ता : अभी ये सब लोग जो कीर्तन कर रहे हैं, 'दादा भगवान के असीम जय जयकार हो', उसमें दादा भगवान की पहचान कैसे करवाते हैं?

दादाश्री : दादा भगवान तो अलौकिक वस्तु है। दादा भगवान यानी चौदह लोक के नाथ! ये जो दिखाई देते हैं, वे तो 'ए.एम.पटेल' हैं और जो भीतर प्रकट हुए हैं, वे खुद चौदह लोक के नाथ हैं। यानी कि साढ़े तेरह लोक के नहीं, चौदह लोक के नाथ हैं! संपूर्ण! और मैं तो ज्ञानी पुरुष हूँ। अत: जब कोई नहीं है, तब मैं अपने चौदह लोक के नाथ के साथ, हम दोनों साथ रहते हैं। और कोई आए, तब बातचीत करते समय हम बाहर आते हैं। इन ए.एम.पटेल के साथ आते हैं। यानी 'दादा भगवान' मैं खुद नहीं हूँ।

भगवान होकर बैठने में ज़ोखिम

प्रश्नकर्ता : आपको भगवान होने का मोह है क्या?

दादाश्री : मुझे तो भगवान बनना, वह तो बहुत बोझ जैसा लगता है। मैं तो लघुतम पुरुष हूँ। इस वर्ल्ड में भी मुझसे लघु कोई नहीं है, ऐसा लघुतम पुरुष हूँ।

मैं भगवान हो नहीं बैठा हूँ। क्योंकि इस दुषमकाल में कोई भी व्यक्ति कहे कि 'मैं भगवान हूँ' वह बहुत बड़ी जोखिमदारी का स्वीकार कर रहा है। वह अपने खुद के लिए जोखिमदारी लेता है। उसमें हमें कोई हर्ज नहीं है। हमें स्वीकार करना है या नहीं करना है, वह हमारे हाथ की बात है। और वह बोले उसे, उसमें हम मना भी कैसे कर सकते हैं? परंतु वह तो भयंकर नर्कगति की निशानी है। क्योंकि लोग तो उसकी वाणी के कुछ शब्दों पर से उसे भगवान मानकर चलेंगे, तो क्या होगा?

अभी, इस काल को वेदांतियों में कलियुग कहा जाता है और जैनों में दुषमकाल कहा जाता है, ऐसे काल में मनुष्य पूर्णता तक नहीं पहुँच सकता। दो-चार डिग्री की कमी तो रहेगी ही। इसलिए मनुष्य को खुद भगवान हो नहीं बैठना चाहिए, वर्ना भयंकर जोखिमदारी है। हमें भगवान कहें तब भी हम 'मना' करते हैं! हमें भगवान होकर क्या काम है?

मेरा अभी 'दादा भगवान' स्वरूप होना बाकी है

अरे उसमें, भगवान होने के लिए, मैंने प्रयत्न किए, परीक्षा दी, लेकिन परीक्षा में 'मैं' नापास हो गया! यानी यह मैं नापास (असफल) हो चुका यहाँ रहा हूँ, भीतर तो भगवान प्रकट हुए हैं। लोग कहते हैं, 'ये दादा भगवान आप हो?' मैं कहता हूँ, 'नहीं, मैं तो ज्ञानी पुरुष हूँ'। इसलिए मैंने स्पष्टीकरण किया है कि ये तो ज्ञानी पुरुष हैं, भगवान नहीं है। ज्ञानी पुरुष यानी, इनसे तो सबकुछ पूछ सकते हैं। पूरे वर्ल्ड में कोई भी ऐसा आध्यात्मिक प्रश्न नहीं है, जिसका यहाँ पर जवाब न मिले। पैंतालीस आगम के सभी जवाब मिलते हैं, संपूर्ण और इस संसार के भी सभी प्रश्न पूछ सकते हैं, सभी के स्पष्टीकरण भी इनके पास होते हैं। यानी वर्ल्ड के सभी शास्त्रों का सार दें, ऐसे हैं। कोई चीज़ पूछनी बाकी न रखी हो, ऐसे ज्ञानी पुरुष हैं, परंतु भगवान नहीं हैं। भीतर जो प्रकट हुए हैं, वे दादा भगवान हैं! वे मुझमें तीन सौ छप्पन डिग्री पर हैं और भगवान तीन सौ साठ डिग्री पर हैं। यानी मेरी ही चार डिग्री कम हैं। जब लोग ऐसा पूछते हैं कि, 'दादा भगवान, वह तो आपका स्वरूप हैं न'? तब मैं क्या कहता हूँ कि, 'हाँ, मेरा ही स्वरूप हैं'। परंतु उस स्वरूप मैं आज नहीं हुआ हूँ। मैं तीन सौ छप्पन डिग्री पर ही हूँ।

मेरेपन से मुक्त होते ही, बने पब्लिक ट्रस्ट

हम 'भगवान हैं', ऐसा कहते ही नहीं। अब हमें वह पद चाहिए भी नहीं। क्योंकि चौदह लोक के नाथ संपूर्ण मेरे वश हो गए हैं, फिर वह पद लेकर मुझे क्या काम है? हमारी चार डिग्री कम हैं भगवान से, फिर भी इस देह में नहीं रहते, वह बात तय है। इस देह का मालिक नहीं हुआ, इस मन का मालिक नहीं हुआ, इस वाणी का मालिक नहीं हुआ।

मालिकी बिना की यह वाणी है। 'मेरी वाणी' कहते हैं, उसमें 'मेरापन' आ गया, इसलिए पॉइज़न हो गया! 'मैंने बोला और मेरी वाणी', वह पॉइज़नस वाणी कही जाती है जबकि यह तो मालिकी बिना की वाणी है। तो यह वाणी कौन बोल रहा है आपके साथ? यह ओरिजनल टेपरिकॉर्ड बोल रही है। वक्ता ओरिजनल टेपरिकॉर्ड

है, आप श्रोता हो और मैं ज्ञाता-द्रष्टा हूँ, ऐसा व्यवहार है!

'हम' अकेले ही मुक्त नहीं हुए हैं, परंतु 'यह' पूरा जो है न, शरीर, यह पब्लिक ट्रस्ट है। हमें इससे कुछ लेना-देना नहीं है। 'यह' पब्लिक ट्रस्ट हो गया अब।

भूलें दिखाए भीतर वाले भगवान

मेरी स्थूल और सूक्ष्म भूलें होती ही नहीं। परंतु जगत् में किसी को भी नुकसान न करें, ऐसी मेरी जो भूलें होती हैं, सूक्ष्मतर और सूक्ष्मतम भूलें, जो केवलज्ञान को रोकती हैं, केवलज्ञान को रोके, ऐसी भूलें होती हैं, वे भूल 'भगवान' 'मुझे' दिखाते हैं। तब 'मैं' जानता हूँ न, कि 'मेरा *ऊपरी* है यह।' ऐसा पता नहीं चलता? अपनी भूलें दिखाए, वह भगवान *ऊपरी* है या नहीं?

प्रश्नकर्ता : हाँ, ठीक है।

दादाश्री : इसलिए हम कहते हैं न कि, यह भूल जो हमें दिखाते हैं, वह चौदह लोक का नाथ है। उन चौदह लोक के नाथ के दर्शन करो। भूल दिखाने वाला कौन है? चौदह लोक का नाथ!

और वे 'दादा भगवान' तो मैंने देखे हैं, संपूर्ण दशा में हैं अंदर! उसकी मैं गारन्टी देता हूँ। मैं ही उन्हें भजता हूँ न! और आपको भी कहता हूँ कि, 'भाई, आप दर्शन कर जाओ। 'दादा भगवान' 360 डिग्री और मेरी 356 डिग्री हैं। इसीलिए हम दोनों अलग हैं, वह प्रमाणित हो गया या नहीं?

प्रश्नकर्ता : हाँ, वैसा ही है न!

दादाश्री : हम दोनों अलग हैं। भीतर प्रकट हुए हैं, वे दादा भगवान हैं। वे संपूर्ण प्रकट हो गए हैं, परम ज्योति स्वरूप!

'ज्ञानी भक्त' भजते हैं 'दादा भगवान' को

जो 'दादा भगवान' हैं, उनकी भक्ति तो मैं भी करता हूँ। मुझे चार डिग्री बढ़ानी तो है न! कमी तो है न, तब तक मुझे भी भक्ति करनी है। यहाँ पर तो, जैसे भक्त आप हो, मैं भी वैसा ही भक्त हूँ! ये जो दिखाई देते हैं, वे दादा भगवान नहीं हैं। ये तो ए.एम.पटेल हैं, भादरण के पाटीदार हैं। भीतर दादा भगवान बैठे हैं। मैं खुद भी दादा भगवान के जय जयकार बुलवाता हूँ न! इसलिए मैं भी भक्त हूँ और आप भी भक्त हो!

प्रश्नकर्ता : यानी ज्ञानी पुरुष जो हैं, वे दादा भगवान के भक्त हैं?

दादाश्री : हाँ! मैं दो आने का भक्त, आप आठ आने के भक्त हो, अत: क्या भक्त की डिग्री में फर्क आ गया? सभी भक्त की डिग्री में ही है।

इतना वाक्य समझें न, तो बहुत काम हो जाएगा।

अब मुझे भी चार डिग्री पूरी करनी हैं न? केवलज्ञान में नापास हुआ हूँ। केवलज्ञान की परीक्षा में नापास हुआ इसलिए फिर मुझे परीक्षा तो देनी पड़ेगी न, फिर से? मुझे चार डिग्री पूरी नहीं करनी हैं? इसलिए मैं क्या करता हूँ? 'ऐसा' करके (अपने आपको) नमस्कार करता हूँ। मैं भी 'ऐसा' करके दादा भगवान के असीम जय जयकार बोलता हूँ न! और आपको भी बोलने के लिए कहता हूँ। चार डिग्री कम हैं तो मुझे भी बोलना पड़ेगा या नहीं बोलना पड़ेगा? आपकी भी पाँच-छ: डिग्री कम होगी या नहीं होगी? आपकी भी थोडी-बहुत कम होगी न?

प्रश्नकर्ता : हाँ जी।

दादाश्री : कम है तो बुलवाओ। और यह

बोलोगे न, तो आपकी भी डिग्री बढ़ेगी। इसलिए 'दादा भगवान के असीम जय जयकार हो' बोलना। मैं भी बोलता हूँ न, आपके साथ। आपके भीतर वही दादा भगवान बैठे हुए हैं। आपकी डिग्री कम हैं तो हमने बताया उस तरह से पूरी करो। उसमें हर्ज़ है? और आपको तो काम से काम है न! मेरी चार डिग्री कम हैं, इसलिए मैं गाता हूँ, आपकी डिग्री ज़्यादा कम हैं तो आप भी गाओ।

'आपके' भीतर भी 'वे' ही

ये दादा भगवान आपमें भी हैं, इनमें भी हैं और सभी में हैं। परंतु यहाँ ये प्रकट हो चुके हैं। यानी दादा भगवान तो भीतर वाले जो हैं, वे हैं। हाँ, आपके भीतर वही हैं, और ये 'असीम जय जयकार हो' बोलने से आपमें प्रकट होते हैं। आप इन दादा भगवान की जितनी भक्ति करोगे उतने आपके भीतर भगवान प्रकट होंगे इतना ही हम कहना चाहते हैं। ये बुलवाने से दिनोंदिन प्रकट होते जाते हैं। बस, इतना ही तो करना है।

शब्द - शब्द में अमृत पियें

प्रश्नकर्ता : दादा भगवान के असीम जय जयकार हो, इसे स्थूल कह सकते हैं?

दादाश्री : यह सूक्ष्मतम के नज़दीक का है, सूक्ष्मतर और सूक्ष्मतम के बीच का है। यह तो, क्या ऐसी-वैसी चीज़ है? किसी शास्त्र में न हो, ऐसा है। इन सभी शास्त्रों का जोड़ करें, तो इतनी सी दवाई निकलेगी। जबकि 'असीम जय जयकार हो' यह सभी शास्त्रों के सार का भी अर्क है।

प्रश्नकर्ता : अन्य लोग भी ऐसे भगवान का नाम बुलवाते हैं, तो वह क्या कहलाएगा?

दादाश्री : वह भी खुराक है। परंतु उससे क्या होता है, कि जपते ही रहें तो जपयज्ञ होता है। इसलिए अंदर शांति होती है। शांति होने से उसमें सभी तरह से शक्ति स्टैबिलाइज़ होती है। वे सभी जो-जो नाम-जाप जपते हैं, वे सभी जपयज्ञ हैं।

और ये 'असीम जय जयकार' तो शब्द-शब्द में अमृत पीना है। यह तो, जैसे अमृत की शीशी पीते हो, उसके जैसा है, यह जपयज्ञ नहीं है। यों अमृत पीते हो वैसा है। यानी यह और ही तरीका है। ऐसा न मिल पाए तो अंत में जो मिले वह भी खुराक है। वह खाना न, तो जीवन, तो जीवित रहोगे। खुराक बिना तो रह ही नहीं सकते न!

प्रश्नकर्ता : यह मिलने के बाद उस तरफ जाने की ज़रूरत ही नहीं है।

दादाश्री : कोई जाता ही नहीं न! जिसे सनातन मिल गया है, वह कौन ढूँढेगा ऐसा?

आत्मा के आनंद की शुरूआत

हम एक गाँव में गए थे। वहाँ एक प्रोफेसर मुझसे कहने लगे, ''इन सभी से 'दादा भगवान के असीम जय जयकार हो'' बुलवाते हो, वे आपका नाम बोले, उसमें क्या फायदा? मैंने कहा, 'यह मेरा नाम नहीं है। आप एक बार समझ लो। दादा भगवान भीतर प्रकट हुए हैं, मैं तो ज्ञानी पुरुष हूँ'। उससे उनके मन का समाधान हुआ। लेकिन फिर कहते हैं, 'फायदा क्या है इससे?' मैंने कहा, 'आप बोलना शुरू करो। आप तो प्रोफेसर हो'। वे यों धीरे से बोले परंतु बहुत अच्छा बोले और सात ही बार बोले। कहते हैं, 'मुझे कुछ मत कहना, अनुभव हो गया'!

उन्होंने सार समझकर यह किया, तो सात ही बार बोलने से उन्हें अनुभव हुआ। और ये

लोग तो? ये जो बोलते हैं न, वे उसे ऐसा समझते हैं कि हम राम का नाम गाते रहते हैं, उसके जैसा है यह। यह बच्चा नोट फाड़ दे, फिर उससे कहें कि 'तुझे जो नोट दी थी, वह बहुत कीमती थी' और फिर उसका प्रमाण दिखाए न, तब फाड़ दी हो उस जगह जाकर टुकड़े ले आएगा वापस। पर जब पता चले तब, उसके जैसा है। वर्ना, इस चीज़ को पद्धतिनुसार बोले तो अनुभव होता है। मैं कहता हूँ न, दिस इज़ द कैश बैंक ऑफ डिवाइन सॉल्यूशन (यह दिव्य अनुभव का नकद बैंक है)! यह एक ही वाक्य पूरा डिवाइन सॉल्यूशन है, बिल्कुल कैश बैंक है। अतः 'दादा' यह बुलाते हैं, वह बहुत ही कीमती चीज़ है। बुलवाओ अब!

प्रश्नकर्ता : दादा भगवान के असीम जय जयकार हो, दादा भगवान के असीम जय जयकार हो, दादा भगवान के असीम जय जयकार हो...

दादाश्री : देखो न, मुँह में पान भरा हुआ है क्या, आपने? तो पान निकाल दो न! अब बोलो।

प्रश्नकर्ता : दादा भगवान के असीम जय जयकार हो, दादा भगवान के असीम जय जयकार हो...

दादाश्री : अब, सातवीं बार में उन भाई ने कहा कि मुझे अनुभूति हो गई। हाँ, तो फिर इन लोगों को एक सौ सातवीं बार में भी अनुभूति होगी या नहीं होगी? यानी अमृत पीने जैसा है।

प्रश्नकर्ता : वे भाई कहते थे कि मुझे यह बोलने से अनुभव हो गया, तो उन्हें क्या अनुभव हुआ?

दादाश्री : आनंद का! आनंद की शुरूआत हो गई। अन्य किसी चीज़ से आनंद की शुरूआत नहीं होती। सिर्फ शांति होती है, मन की शांति होती है और इससे तो आत्मा के आनंद की शुरूआत होती है।

प्रत्यक्ष भगवान का कीर्तन

शांति और आनंद दो अलग चीज़ हैं। मानसिक शांति, उसका फल मस्ती में आ जाता है और (वास्तविक) आनंद में मस्ती नहीं होती। आनंद निराकुलता वाला होता है, जबकि वह तो मस्ती के तान में। फिर जब उतर जाती है तब शराब उतर गई हो वैसा हो जाता है वापस, बिल्कुल ढीला!

प्रश्नकर्ता : 'दादा भगवान के असीम जय जयकार हो' यहाँ ऐसा बोलते रहते हैं और क्रमिक मार्ग में भी ऐसा बोलते रहते हैं, तो फर्क क्या है?

दादाश्री : यहाँ यह आत्मरमणता है। शब्द बोले बिना आत्मरमणता होती है, वह तो स्वाभाविक है। परंतु ये शब्द बोलकर आत्मरमणता होती है। और क्रमिक मार्ग में भी ऐसा बुलवाते हैं और सभी बोलते हैं तब भी वह मन की मस्ती बढ़ती रहती है। वहाँ मन मस्ती में आ जाता है। शरीर, अंगों में, सभी में बदलाव दिखाई देता है, सब मस्ती में आ गए हैं यों दिखाई देता है। मस्ती देखी है क्या लोगों की? फिर कहते भी हैं कि मस्ताने हैं। ओहोहो, मस्ताने आए! लेकिन फिर उतर जाती है वापस। शराब उतर जाती है न, वैसे वह भी उतर जाती है। इमोशनल सब, बिल्कुल पूरा शरीर इमोशनल होता है, आनंद की ओर इमोशनल! यानी आनंद ओर इमोशनल होने पर देख लो इनकी मस्ती। और यह दूसरी तरफ विषाद की ओर इमोशनल हुआ इसलिए फिर आ गया! जबकि यह तो निराकुलतामय है! यह तो आत्मरमणता है, बाकी बोलने से

आत्मरमणता नहीं होती। लेकिन यह तो प्रत्यक्ष भगवान का कीर्तन है, उनका संकीर्तन करना है। यह कौन सी भक्ति कहलाती है? कीर्तनभक्ति! यों तो भगवान की भक्ति बहुत दिनों तक की। लेकिन वह प्रत्यक्षपन नहीं था न! प्रत्यक्ष होती तो फल देती।

प्रत्यक्ष प्राप्त कराए कैश फल

प्रश्नकर्ता : प्रत्यक्ष किसे कहते हैं?

दादाश्री : प्रत्यक्ष तो, ज्ञानी पुरुष में प्रकट होते हैं। अभी आप बाज़ार से सब्ज़ी लाते हो तो प्रत्यक्ष लाते हो या कागज की चलती है?

प्रश्नकर्ता : प्रत्यक्ष ही चाहिए।

दादाश्री : कागज पर चित्रण की हुई नहीं चलती? यानी कि सबकुछ प्रत्यक्ष हो तभी काम का।

और यह तो दुनिया का आश्चर्य है। दिस इज़ द कैश बैंक ऑफ डिवाइन सॉल्यूशन। परंतु मेरी उपस्थिति हैं तब तक यह आश्चर्य रहेगा, उसके बाद नहीं रहेगा। बाद में, वे तत्व कम हो जाते हैं। जैसे ये दवाई होती हैं न, उनका तत्व कब तक रहता है? वे दवाईयाँ मुद्दत से बाहर हो जाए तो क्या होता है?

प्रश्नकर्ता : 'एक्स्पायर्ड डेट' (समाप्ती तारीख) हो जाती है।

दादाश्री : ऐसे ये भगवान भी मुद्दत से बाहर कुछ भी फल नहीं देते। हाँ, भगवान की भी मुद्दत चली जाती है। वह तो मुद्दत में होते हैं, प्रत्यक्ष हो तभी फल मिलता है। टाइम (समय) लिखा हो तब तक दवाई काम करती है। उसके बाद तो दवाई काम नहीं करती। परंतु कोई नयी दवाई न मिल रही हो तो फिर वह दवाई लोग पीते ही हैं न, राम-राम करते ही रहते हैं न! यानी पहले के भगवान को अभी याद करते रहें तो क्या फायदा मिलेगा?

और यदि प्रत्यक्ष भगवान मिल गए तब तो काम ही हो जाएगा न! यह तो, प्रत्यक्ष दादा भगवान की कीर्तनभक्ति करते हैं, खुद को उस रूप होने के लिए भगवान भी प्रत्यक्ष चाहिए। यह भगवान की सीधी डिरेक्ट कीर्तनभक्ति है। प्रत्यक्ष न मिले तब तक परोक्ष भक्ति करनी चाहिए। अब परोक्ष भक्ति करते हैं, उससे बहुत ही कम फल मिलता है। परोक्ष में परोक्ष को समझकर करना होता है। परोक्ष को यदि समझकर करते हो न, तब भी फल मिलता है। और यह प्रत्यक्ष की तो बात ही अलग है न! जो माँगोगे वह मिलेगा!

प्रकट दादा से माँगना आना चाहिए

जैसे कबीर साहब ने साखी में बोला है न, कि 'सब घट मेरे सांईया' यानी कि हर एक घट में अर्थात् हर एक बॉडी में, जीवमात्र में मेरे सांईया यानी कि मेरे भगवान बैठे हुए हैं। हर एक देहधारी में, वह फिर गाय हो, जानवर हो, भैंस हो, देवता हों या चाहे कोई भी हो, परंतु सभी में मेरे सांईया बैठे हुए हैं। फिर कहते हैं, कि 'खाली घट न कोई'। एक भी घट यदि खाली हो जाए तो लोग जला देते हैं या तो दफना देते हैं, परंतु रखते नहीं। सांई चले गए कि हो गया, खत्म! फिर क्या कहते हैं? 'बलिहारी उस घट की, जो घट प्रकट होई।' वे क्या कहना चाहते हैं? उस घट की, उस शरीर की बलिहारी है कि जिसमें भगवान 'फूल' (पूर्ण) प्रकट हुए हैं, व्यक्त हो गए हैं, उस घर की बलिहारी है। वर्ना अव्यक्तभाव से तो सभी में हैं ही। इन व्यक्त के पास बैठने से आपके भगवान व्यक्त होते रहते हैं। वर्ना अन्य कोई उपाय है ही नहीं।

अब, 'फूल' प्रकट हुए, तो उसकी निशानी क्या? जो माँगो वह दें, माँगना आना चाहिए। फिर आपको क्या हर्ज़ है?

यानी ये जो 'दादा भगवान' प्रकट हुए हैं, ऐसे दुनिया में कभी प्रकट नहीं होते। जब कभी प्रकट होते हैं न, तब हमें मिल नहीं पाते। यह तो आज मिलें हैं, अब आपको माँगना आना चाहिए। यहाँ तो टेन्डर भरना आना चाहिए और मैं तो भीतर वाले भगवान से कह दूँगा कि 'भगवान कृपा कीजिए, दीजिए'। परंतु आपको तो मेरे पास टेन्डर रखना है। फिर पास मुझे करवाना है न?

जो माँगो वह अभी मिले, ऐसा है। यदि आपको माँगना आए तो माँग लेना। लेकिन मैं ऐसा कहता हूँ कि यह भौतिक मत माँगना। भौतिक का परिणाम भटकने वाला आएगा। बाकी हमेशा का सुख ढूँढना। यह टेम्परारी एडजस्टमेन्ट मत ढूँढना। ऑल दीज़ रिलेटिव्स आर टेम्परेरी एडजस्टमेन्ट्स! ये रिलेटिव सभी कैसे हैं? टेम्परारी एडजस्टमेन्ट हैं। मोक्ष माँगोगे तो मोक्ष मिलेगा, एक घंटे में मोक्ष मिलेगा। उसके बाद फिर चिंता हो तो उसकी जोखिमदारी भगवान के सिर।

और दिस इज़ द कैश बैंक ऑफ डिवाइन सॉल्यूशन! 'असीम जय जयकार' आप दो घंटे बोलो, तो आपको तुरंत ही उसका फल मिलता है।

प्रश्नकर्ता : वह किस प्रकार का फल देता है?

दादाश्री : जीव को जो आनंद चाहिए, वह आनंद आता है। शांति नहीं, शांति तो बाहर सभी जगह होती है। शांति तो बाहर कोई क्रिया करे तब भी शांति होती है, पर आनंद नहीं होता और इसमें आनंद होता है। बाहर ऐसा कुछ बोले तो वह मानसिक इफेक्ट होता है और यह तो भीतर एकदम आनंद अनुभव में आता है, निराकुलता लगती है।

प्रत्यक्ष के जयकार से आंतरिक सुख मिलता है

यानी ये 'दादा भगवान' के असीम जय जयकार बुलवाता हूँ। बोलने में अब कोई हर्ज़ है? आपको क्या लगता है?

प्रश्नकर्ता : क्यों हर्ज़ होगा?

दादाश्री : तो मैं बुलवाऊँ, वह बोलना। 'दादा भगवान के असीम जय जयकार हो, दादा भगवान के असीम जय जयकार हो, दादा भगवान के असीम जय जयकार हो...'

मैं अपने आप का नाम गवाता रहता हूँ न? ये असीम जय जयकार बुलवाता हूँ, उसमें आपको क्या फायदा?

प्रश्नकर्ता : महान पुरुष का नाम लेने से शांति होती है। वह तो स्वाभाविक है न!

दादाश्री : लेकिन इसमें आपको क्या फायदा है? मैं अपना नाम गाने लगाऊँ, इसमें आपको गाने की क्या ज़रूरत है? आपको तो मुझसे कहना चाहिए कि 'आप मेरा नाम गाओ'। खुद ही अपना नाम गाने लगाए तो लोग क्यों गाते होंगे?

प्रश्नकर्ता : आप समझाईए।

दादाश्री : ऐसा है, ये जो 'दादा भगवान' हैं, उनका ही नाम लेते हैं। यदि यह मेरा नाम होता न और यह दादा भगवान का नाम मैं बुलवा रहा होता न, तो आपमें से एकाध व्यक्ति, कोई बुद्धिशाली हो वह कहता कि 'ये तो अपना नाम गवाते रहते हैं, हमारा कुछ भी नहीं है'। अरे! मैं

भी वहाँ उनके मुँह पर कह देता कि 'भाई, मैं खाली नहीं बैठा हूँ, आपका नाम गाने के लिए'। लेकिन ये तो चौदह लोक के नाथ हैं, इनका नाम लेते हैं। फिर वहाँ क्या बाकी रहेगा? वहाँ रहेगा कुछ? आपको पहचान नहीं हुई थी, इसलिए उनकी यह पहचान करवा दी। उन्हें मैंने खुद देखा है और इन सभी को दिखाया है और आपको भी दिखा देंगे।

यानी यह मेरा नाम नहीं गवाता हूँ। मेरा नाम गवाने का तो अर्थ ही क्या? वर्ना, अपना नाम गवाना होता तब तो मैं सभी से कह देता कि यह नहीं बोलना, आपको इससे क्या फायदा? लेकिन यह तो भगवान को ही भगवान कहता हूँ। यानी जो भगवान हैं, उनके गीत हम गाते हैं। यहाँ दूल्हेराजा हो और उनके गीत गाएँ तो वह सही है। वर्ना, दूल्हा हो नहीं और हम गीत गाएँ, उसका क्या अर्थ? जो नहीं हैं और उनके गीत गाएँ तो वह ठीक है, उसका परोक्ष फल तो मिलता है। उस परोक्ष का फल क्या मिलता है? उससे ये भौतिक सुख मिलते हैं, आंतरिक सुख नहीं मिलते। आंतरिक सुख तो प्रत्यक्ष का फल है!

भरते हैं घाव हृदय के

अनंत जन्मों से हृदय में जो घाव पड़े हैं, जो घाव दिल में पड़े हैं, उन घावों को भरने का कोई रास्ता ही नहीं है। धर्म प्राप्त होता है, परंतु घाव भरने का रास्ता नहीं है। यह एक ही वाक्य ऐसा है कि घाव भरते हैं। 'दादा भगवान के असीम जय जयकार हो' बोलने से भीतर के सभी घाव भरते रहते हैं। भीतर हृदय में घाव पड़े होते हैं। सभी लोग नहीं कहते हैं कि मेरे दिल में घाव हुआ है? इन शब्दों से घाव होते हैं। कोई बोले तो पत्थर जैसा घाव लगता है या नहीं लगता? इसलिए जब ये सभी घाव भर जाएँगे तब मोक्ष होगा, यों ही मोक्ष नहीं हो सकता। एक घाव भरने आया हो तब तक दूसरा घाव हो ही जाता है और 'यह' बोलते रहोगे न, तो सभी घाव भर जाएँगे।

एक घंटा बोलोगे तो दादा भगवान दिखाई देंगे

'दादा भगवान के असीम जय जयकार हो', यह प्रत्यक्ष भक्ति है भगवान की, इसलिए कम से कम आठ मिनट बोलना है और ज़्यादा टाइम हो तो पचास मिनट बोलना। पचास मिनट बोलोगे तो दादा भगवान के दर्शन भी होंगे। इसलिए यह बोलना। और कभी-कभार पचास मिनट न बोल पाए तो आठ मिनट से कम नहीं बोलना, तब भी चलेगा। आठ मिनट से ज़्यादा बोलना शुरू हुआ, तो वह भयंकर पापों को भस्मीभूत करके मोक्ष की ओर ले जाए, ऐसा है। क्योंकि ये प्राकट्य हैं, दादा भगवान प्रकट हैं। महावीर भगवान का नाम लें, परंतु आज वे प्रकट नहीं हैं। इसलिए ऐसा काम नहीं करते वे। यह तो सिर्फ दर्शन करने से ही पाप नाश हो जाए ऐसा है, तो आप ये 'दादा भगवान के असीम जय जयकार हो' बोलोगे तब तो क्या हो जाएगा!

भीतर भगवान उपस्थित हैं और उनको ही आप पहुँचाते हो। भगवान उपस्थित हैं उनके दर्शन भी आपने किए हैं! यह तो, आपको ऐसा लगता है कि मैं यहाँ दर्शन कर रहा हूँ, परंतु भीतर पूर्ण तक पहुँच गए, उस समय हमने भगवान से कहा कि 'इसे आशीर्वाद दीजिए'। अब, इससे भी अधिक आगे आपको चाहिए या इतना चलेगा?

प्रश्नकर्ता : आपको जो ठीक लगे वह।

दादाश्री : इस पतंग की डोर छूटी हुई थी

और आप उसके पीछे दौड़ते थे, कि 'मेरी पतंग पलटी खा रही है' अरे, पर डोर आपके हाथ में नहीं है, फिर पलटी खाए उसका क्या करें? यह डोर आपको सौंप दी, वह पलटी खाए तब खींचना। कुछ लोग तो 'असीम जय जयकार' रोज़ एक घंटा बोलते हैं तो उन्हें दादा भगवान दिखाई देते हैं। फिर हमें और क्या चाहिए?

यह कोई कन्डिशनल नहीं है

प्रश्नकर्ता : 'जय जयकार', वह भाव अनुसार करना हैं या निश्चयपूर्वक?

दादाश्री : निश्चयपूर्वक करना अच्छा है।

प्रश्नकर्ता : इसे निर्धारित समय पर, निर्धारित समय तक ही करना है?

दादाश्री : निर्धारित समय पर नहीं, किसी भी टाइम पर बोल सकते हो। संडास में बैठे-बैठे बोलोगे तो भी चलेगा न!

प्रश्नकर्ता : मान लीजिए कि हमने टाइम तय किया है कि सुबह सात से आठ, एक घंटे बोलना है। अब, उस अनुसार, उसी नियम से करे, वह ज़्यादा अच्छा है न?

दादाश्री : निर्धारित समय पर करोगे तो ज़्यादा अच्छा है, लेकिन निर्धारित समय न रहें तब तो फिर कभी भी बोलना। निर्धारित समय कुछ ही व्यक्ति को मिलता है, सभी को नहीं मिलता।

प्रश्नकर्ता : अब, मान लीजिए कि तय किए हुए टाइम पर रोज़ बोलते हैं, कईं बार उसमें भाव होता है और कईं बार भाव नहीं भी होता, फिर भी बोलें तो?

दादाश्री : भाव की मुझे ज़रूरत ही नहीं है न! मैंने कहाँ ऐसा बोला है? कोई कन्डिशनल (शर्ताधीन) नहीं है यह। भाव हो या न हो, उसकी मुझे कोई ज़रूरत नहीं है। आपके कान को सुनाई दे, ऐसा बोलना। आपको समझ में आया न? आपके मन में ऐसा हुआ कि भाव बिगड़ रहे हैं तो बंद कर देना? ऐसा है न, इसमें भाव होता ही नहीं है। अक्रम मार्ग में भाव जैसी चीज़ ही नहीं रहती। भाव कैन्सल हो चुका है, उसे अक्रम कहते हैं। और ये लोग जो भाव शब्द बोलते हैं न, वे इच्छा को भाव कहते हैं।

'यह' सिर्फ बोलना ही है

प्रश्नकर्ता : यह बोलते समय, आत्मा के गुण आँखों के समक्ष हों तो?

दादाश्री : नहीं, गुणों की बात ही नहीं करनी है इसमें। यह सिर्फ बोलना ही है। इसमें गुणों की ज़रूरत ही नहीं है। गुण, वह तो अलग चीज़ कहलाती है। वह उपयोग कहा जाता है। उससे खुद के शुद्ध उपयोग में रह सकते हैं और उससे सिद्ध स्तुति होती है। पर इसमें गुण नहीं हैं, यह तो सिर्फ बोलना ही है। वह भी अपने कान को सुनाई दे उतना ही, तो आठ मिनट से ज़्यादा प्रयोग करके देखना। अनुकूल आए तो करना, उसे पचास मिनट तक करना। लेकिन यह तो सभी को अनुकूल ही आ जाएगा।

इसमें हेतु सहजता का

प्रश्नकर्ता : दादा की उपस्थिति में बोलें और अनुपस्थिति में बोलें, उसमें भी फर्क पड़ता है?

दादाश्री : बहुत फर्क पड़ जाता है। इसलिए मैं बैठता हूँ न, यहाँ पर! और फिर 'बोलो' कहता हूँ न! क्योंकि यहाँ पर बिल्कुल नज़दीक है न! जितना संग नज़दीक उतना ही लाभ। घर पर बोलते हैं और यहाँ बोलते हैं, उसमें फर्क पड़ता है।

प्रश्नकर्ता : मैं ताली बजाने का विरोध करता था लेकिन आज तो सभी के बजाय मैं ज़्यादा ज़ोर से ताली बजाता हूँ। तो ऐसा क्यों होता होगा?

दादाश्री : ऐसा है न, ऐसा कोई नियम नहीं है कि ताली बजाने से ही मोक्ष होगा। और ऐसा भी कोई नियम नहीं है कि चुपचाप बैठकर पढ़ते रहेंगे तो मोक्ष होगा। मोक्ष जाने का नियम कैसा है? व्यक्ति सहज रहता है या नहीं, उतना ही देखना।

अब, कुछ लोग यों चुपचाप बैठे रहते हैं, ताली नहीं बजाते, पढ़ते रहते हैं, लेकिन उसमें एटिकेट आ गया थोड़ा सा। ये लोग कहेंगे कि, 'ताली बजाने से चित्त एकाग्र नहीं रहा'। लेकिन यह जो पहले की चिढ़ घुस गई है न, उस चिढ़ को निकालने के लिए हम यह सब करते हैं। अनंत जन्मों से चिढ़ घुस गई है, उस चिढ़ को निकालने के लिए यह प्लस-माइनस करके और सहज करना है।

तीर्थंकरों के कीर्तन गाया करो

प्रश्नकर्ता : ये दादा भगवान आप जिन्हें बुलवाते हैं वे और ये सीमंधर स्वामी, इनमें ऐसा क्या संबंध है?

दादाश्री : ओहोहो! वे दोनों तो एक ही हैं। लेकिन इन सीमंधर स्वामी को दिखाने का कारण यह है कि अभी मैं देह सहित हूँ इसलिए मुझे वहाँ जाने की ज़रूरत है। क्योंकि जब तक सीमंधर स्वामी के दर्शन नहीं होंगे, तब तक मुक्त नहीं हो सकते। एक जन्म बाकी रहेगा। मुक्ति तो, इन मुक्त हो चुके (भगवान) के दर्शन से मिलेगी। हालांकि मुक्त तो मैं भी हो चुका हूँ लेकिन वे संपूर्ण मुक्त हैं। वे हमारी तरह लोगों को ऐसा नहीं कहते कि, ऐसे आना या वैसे आना। मैं आपको ज्ञान दूँगा। वे ऐसी सारी खटपट नहीं करते।

हम सीमंधर स्वामी को नमस्कार बोलते हैं, तब सीमंधर स्वामी का चित्रपट, उनका पद, वह सब एट ए टाइम *लक्ष* में रहता है।

'दादा भगवान के असीम जय जयकार हो', ऐसा बोलते हैं, उस समय ऐसा ही दिखाई देता है और शब्द और रूपक दोनों साथ में होते हैं न, वे बहुत फलदायी होते हैं। हम महाविदेह क्षेत्र में विचरते तीर्थंकर साहब बोलते हैं न, तो तीर्थंकर साहब के दर्शन करते हैं, तब शब्द और रूपक साथ में होते हैं, वे बहुत फलदायी हैं। उनका मुख देखने की ज़रूरत नहीं है, उनका स्वभाविक आकार दिखना चाहिए। 'कृष्ण भगवान' बोलते ही कृष्ण भगवान जैसे हों वैसे दिखाई दे, तो काम बन गया। दिखाई दें, वह रूपक कहलाता है। बोलने के साथ यह एडजस्टमेन्ट करना चाहिए।

सीमंधर स्वामी के साथ हमारी इतनी ज़्यादा पहचान है कि हम कहें उस अनुसार आप दर्शन करो तो पूर्ण तक पहुँचेगा।

वीतरागों के तो जितने बखान करें, उतने कम हैं। उनके कीर्तन लोगों ने गाए ही नहीं और जो गाए हैं उनके राग ठीक नहीं हैं। वीतरागों के कीर्तन यदि अच्छी तरह से गाए होते तो ये दुःख नहीं होते। वीतराग तो बहुत समझदार थे! उनका माल तो बहुत ज़बरदस्त! वे तो कहते हैं, 'समकित से लेकर तीर्थंकरों के कीर्तन गाते रहो!' 'तो फिर साहब अपकीर्तन किसके करूँ? अभव्य हैं उनके?' नहीं, अपकीर्तन तो किसी के भी मत करना, क्योंकि मनुष्य का सामर्थ्य नहीं है, इसलिए ऐसा मत करना। अपकीर्तन क्यों कर रहा है? अपकीर्तन वीतरागों से दूर रखता है।

स्वामी के असीम जयकार बोल सकते हैं?

प्रश्नकर्ता : 'सीमंधर स्वामी को निश्चय से नमस्कार करता हूँ', ऐसा जो बोलते हैं, तो निश्चय से ही बोलना है या व्यवहार से बोलना है?

दादाश्री : निश्चय से। और देह तो खड़ा-झुका हुआ हो सकता है, इसलिए हमें देह से लेना-देना नहीं है।

प्रश्नकर्ता : यानी 'मैं सीमंधर स्वामी को निश्चय से नमस्कार करता हूँ', ऐसा जो बोलता हूँ, वह सही है न?

दादाश्री : सही है। व्यवहार यानी देह से। और इस नमस्कार विधि में अन्य जो हैं न, वह सब व्यवहार से हैं। अब, यह सिर्फ यही निश्चय से है।

प्रश्नकर्ता : दादा भगवान का निश्चय से है?

दादाश्री : हाँ, बस। यानी वास्तव में इन्हें ही आपको निश्चय से नमस्कार करने चाहिए, बाकी सभी को व्यवहार से नमस्कार करता हूँ। अब सीमंधर स्वामी को निश्चय से बोलोगे तो हर्ज नहीं है, अच्छी चीज़ कही जाएगी। वहाँ हम निश्चय लिखें तो सभी जगह निश्चय लिखना पड़ेगा।

प्रश्नकर्ता : 'दादा भगवान के असीम जय जयकार हो', जैसे बुलवाते हैं, वैसे 'सीमंधर स्वामी के असीम जय जयकार हो' बुलवा सकते हैं?

दादाश्री : खुशी से बुलवा सकते हैं। परंतु 'दादा भगवान के जय-जयकार' बोलते समय भीतर जो आनंद होता है, वैसा आनंद उसमें नहीं होगा। क्योंकि ये प्रत्यक्ष हैं। उन्हें आप प्रत्यक्ष देख नहीं पाते। वह बुलवा सकते हैं। सीमंधर स्वामी के लिए कुछ भी (गुणगान) बोल सकते हैं। क्योंकि वे अपने शिरोमान्य भगवान हैं और रहेंगे। जब तक हम छूट नहीं जाते तब तक रहेंगे। यह तो हमने अँगुलिनिर्देश किया है, कि इनके लिए जो भी बोलना आए, वह बोलेंगे, उनका कल्याण होगा।

प्रश्नकर्ता : हाँ, अँगुलिनिर्देश है। सब सही है।

दादाश्री : यह सब अँगुलिनिर्देश है। किसी ने अँगुलिनिर्देश नहीं किया है न, क्या करना चाहिए, वह। बातें तो सभी की होगी परंतु अँगुलिनिर्देश नहीं किया कि ऐसा करो!

प्रश्नकर्ता : यह तो, मैंने उस दिन बुलवाया था न, तब एक भाई ने कहा कि ऐसा नहीं बुलवाना चाहिए। निश्चय से नहीं बुलवाना चाहिए। इसलिए मैंने पूछा।

दादाश्री : वैसा बोले हो तो हर्ज नहीं है। उससे ऐसा कुछ पाप नहीं लगता। लेकिन ज्ञानी पुरुष के कहे अनुसार बोलने से उसमें बहुत फर्क पड़ जाता है। बोला हो तो उसका जोखिम नहीं है। प्रतिक्रमण नहीं करना पड़ेगा। सीमंधर स्वामी का सिर्फ नाम लेंगे न, तो भी उन्हें फायदा हो जाएगा।

जागृति : बोलने में और सुनने में भी

प्रश्नकर्ता : 'दादा भगवान के असीम जय जयकार हो' का गुंजन होता रहे तो?

दादाश्री : वह तो बहुत उत्तम है! उसके जैसा तो कुछ भी नहीं है। आपको भी उस गुंजन के साथ ही साथ बोलना चाहिए, यानी वह गुंजन हो रहा हो उसके साथ ताल मिलाना चाहिए।

लेकिन 'दादा भगवान के असीम जय जयकार' कब पहुँचते हैं? जोर से बोलते हैं तब। जितने जोर से बोलोगे न, उतना ही दादा भगवान को अच्छे प्रमाण में पहुँचेगा। क्योंकि हम जोर

से बोलते हैं न तब हम उसमें तन्मयाकार हो जाते हैं तो उसका लाभ मिलता है। इसलिए बाहर जोर से आधा घंटा बोलना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : स्थान तो देखना चाहिए न, कि जोर से बोलने जैसा है या धीरे से बोलने जैसा है, ऐसा?

दादाश्री : जगह तो देखनी है। परंतु ऐसे चिल्लाकर जोर से नहीं बोलना चाहिए। वह तो, आमने-सामने ज़रा सुनाई दे उतना ही ज़रूरी है। या तो अपने कान को थोड़ा सुनाई दे, वैसा बोलना है।

प्रश्नकर्ता : मुझसे जोर से नहीं बोला जाता, मन में बोलूँ तो?

दादाश्री : उसमें हर्ज़ नहीं है।

प्रश्नकर्ता : पूरा दिन मन में 'दादा भगवान के असीम जय जयकार हो', चलता रहता है, तो जोर से बोलने पर ही असर होता है या अंदर मन में बोलते रहे, तो असर होगा?

दादाश्री : अंदर जो बोलते हैं न, वे आपके जैसे निवृत्त हुए बोलते हैं। प्रवृत्ति वाले अंदर कैसे बोलेंगे?

प्रश्नकर्ता : काम हो तब भी अंदर तो बोल ही सकते हैं न?

दादाश्री : अच्छा, वह तो बहुत अच्छा है। वर्ना जोर से बोले, उसके जैसा कुछ भी नहीं। परंतु अंदर से बोलते हो, दिन भर रहता हो तो वह भी उत्तम है। वह कोई गलत नहीं है। अंदर दिन भर बोलते हो, वह भी एक प्रकार की जागृति है न!

मन में कौन बोल सकता है? जो डेवलप हो चुका है, उसे हर्ज़ नहीं। आपके मन में तो अन्य चीज़ें घुस जाती हैं। वे घुस न जाए इसलिए जोर से बोलना है। आपका डेवलपमेन्ट उतना अधिक नहीं हुआ। क्योंकि मन में बोलोगे तो आपके भीतर विचार घुसे बगैर नहीं रहेंगे। इसलिए पूरा साफ नहीं होने देंगे और जोर से बोलोगे तो वह साफ होने देगा।

यानी कि पूरा दिन कीर्तनभक्ति में जाने दो। परंतु कीर्तनभक्ति हुई कब कही जाएगी? आप बोलो और आप ही सुनो तब! यानी दोनों तरफ जागृति चाहिए। सिर्फ बोलने में ही आपकी जागृति नहीं, परंतु सुनने में भी जागृति चाहिए। आवाज धीमी हुई, तेज़ हुई, वह सब आपको पता चलना चाहिए।

प्रकट के ध्यान से होता है निज का ध्याता

अभी और क्लियर होगा, तब ज़्यादा समझ में आएगा।

प्रश्नकर्ता : क्लियर होने के लिए क्या करना है?

दादाश्री : लो, सत्संग में पड़े रहना पड़ेगा। आज्ञा का निरंतर पालन करना पड़ेगा। आज्ञा तो घर बैठे पालन कर सकते हैं। जिससे कम पालन होता है, उसे एक सामायिक करनी चाहिए। 'दादा भगवान के असीम जय जयकार हो', ऐसे पचास मिनट तक सामायिक करनी है बस और पूरी अच्छी तरह से पालन कर सकते हैं, तो हर्ज नहीं है।

'दिस इज़ द कैश बैंक' (यह नकद बैंक है)। यह जो वाक्य है न! कैश बैंक यानी आपके भीतर 'दादा भगवान' अव्यक्त रूप में से हैं और ये यहाँ व्यक्त, प्रकट हो चुके हैं। तो इन प्रकट का ध्यावन (ध्यान) करेंगे न, तो खुद का प्रकट होते रहेगा। आनंदघनजी ने गाया है कि *'प्रगट तत्त्वना ध्यावता, निज तत्त्वनो ध्याता थाय रे'* (प्रकट तत्त्व का ध्यान करने से, निज तत्त्व का ध्याता होता है)। अत: इसे आप रोज़ बोलो न, इसे कब

बोलना है? रात को खाना खाने के बाद पत्नी-बच्चों को, सभी को बैठाकर आपको बोलना है और वे सभी बोलेंगे। इससे आपके भीतर प्रकट होते रहेंगे, व्यक्त होते रहेंगे। इन प्रकट का ध्यावन करते हो इसलिए भीतर व्यक्त होता है। और सिर्फ यही वाक्य, 'दादा भगवान के जय जयकार', यह कैश ही है, तुरंत ही फल देने वाला है। आनंद-वानंद, सभी तरह से और जिस दिन भीतर पचास मिनट बोलोगे न, यानी पूरी सामायिक करोगे तब वह अनुभव होगा।

हम तो क्या कहते हैं? यह 'ज्ञान' लिया हो तब भी 'दादा भगवान के असीम जय जयकार हो', एक घंटा बोलना चाहिए। क्योंकि यह बोलने से आपके भीतरवाले भगवान प्रकट होंगे। यह बोलते ही अपने आप भीतर स्वाद आता है, मानो हाफूस आम चूस रहे हो न, वैसा! एक घंटा कीर्तनभक्ति हो गई तो काम निकल जाएगा। इस काल में अन्य रास्ता नहीं है। इस काल में अन्य नियम पालन हों, ऐसा नहीं है।

भीख-भूख नहीं वहाँ वश होते हैं भगवान

ये भगवान भीतर बैठे हैं, वे मेरे *ऊपरी* हैं, परंतु मेरे वश हो चुके हैं। किस वजह से वश हो चुके हैं? मेरा विनय-भक्ति देखकर वश हो चुके हैं। परंतु मैंने कहा, 'दूसरी जगह जाओ न'! तब वे कहते हैं, 'भाई, कहाँ जाऊँ? दूसरी कोई जगह ही नहीं है कहीं पर'। सभी भीख वाले हैं! मान की भीख, कीर्ति की भीख, फलानी भीख, विषयों की भीख। जहाँ कोई भी भीख है, वहाँ भगवान खड़े नहीं रहते।

ज्ञानी पुरुष को पूरे जगत् का सोना दे तो काम का नहीं है, पूरे जगत् की स्त्रियों संबंधी विचार भी नहीं आते। क्योंकि देह के मालिक नहीं हैं वहाँ पर! फिर वे मान के भूखें नहीं होते, अपमान का भी हर्ज़ नहीं, कीर्ति की ज़रूरत ही नहीं है। जिन्हें किसी भी प्रकार की भीख नहीं, उन्हें यह 'वस्तु' प्राप्त होती है। यानी कौन है उसके लिए फिट? योग्यता किस के पास है? जिन्हें ऐसी किसी भी प्रकार की भीख नहीं है, उन्हें 'वस्तु' प्राप्त होनी ही चाहिए। और फिर सिर्फ 'वस्तु' ही प्राप्त नहीं होती, परंतु भगवान भी वश हो जाते हैं!

पूरे जगत् का ज्ञान जान लें, परंतु ज्ञान की भूख मिटती नहीं, वह बुद्धि है और सिर्फ आत्मा को जान ले, उसके बाद जानने की किसी भी प्रकार की भूख ही नहीं रहे, उसे ज्ञान कहते हैं। फिर किसी भी प्रकार की भूख ही नहीं रहती, किसी भी प्रकार की भूख भी नहीं और भीख भी नहीं!

'ज्ञानी' का अंतर, खुला हुआ यहाँ

मैं बिल्कुल स्पृहा रहित हूँ। मुझे जगत् में किसी भी चीज़ की स्पृहा नहीं रही कि मुझे बंगला चाहिए। मुझे झोपड़ी चलेगी। तिरपाल बाँधकर इतने में भी चलेगा। 'व्यवस्थित' में जो हो, उसमें मुझे कुछ कम-ज़्यादा नहीं करना है। 'व्यवस्थित' में झोपड़ी हो तो झोपड़ी और राजमहल हो तो राजमहल और सेठ के वहाँ हो तो सेठ के वहाँ।

लेकिन जितना मुझे पवित्र रखोगे उतनी ज़्यादा 'प्योरिटी' रहेगी क्योंकि 'दादा भगवान' वे तो शुद्ध परमात्मा ही हैं। उनकी कीर्तनभक्ति से तो कल्याण होगा ही, परंतु इसमें आप मुझे जितना पवित्र रखोगे उतना लोगों का लाभ होगा।

और मैं सौ प्रतिशत गारन्टी के साथ कहता हूँ, कि ये चौदह लोक के नाथ प्रकट हुए हैं। इन दादा भगवान का यों ही नाम लोगे तब भी कल्याण हो जाएगा।

यहाँ हैं पवित्र भगवान

लोग पवित्र परमात्मा को भजते हैं न, तो लोगों का कल्याण होता है। वर्ना, कल्याण कैसे हो सकता है? मिलावट करें, अंबालाल और उन सब को मिला दें, तो क्या मज़ा आएगा? इसलिए मिलावट करने की ज़रूरत नहीं है। ये 'नेट' (पवित्र) भगवान हैं! तीर्थंकर के समय में जो थे, वे अभी भी हैं। ये भगवान में, मैं उनसे अलग हूँ। वर्ना मुझे ही पच्चीसवाँ तीर्थंकर कहते। लेकिन मुझे पच्चीसवाँ तीर्थंकर कहलाकर क्या काम है? हम जो हैं वह बहुत है! हमें तो उनके साथ बैठने को मिलता है, रात-दिन सोने को मिलता है, तब फिर और क्या चाहिए?

प्रत्यक्ष महावीर जितना ही फल

आपको समझ में आया न, यह हम किसकी 'जय जयकार' बुलवाते हैं? जो वास्वत में, रियली भगवान हैं, उनकी ये बुलवाते हैं। यह रूपकों की बात नहीं हैं, यह देहधारी की बात नहीं है। यह वास्तव में जो अमूर्त ऐसे भगवान हैं, उनकी ही बात हैं। यह तो शब्द से अभिवादन करते हैं, उतना ही। वहाँ शब्द भी नहीं पहुँचता, परंतु अपनी बात का, उसका फल एक्ज़ेक्टली मिल जाता है।

महावीर भगवान बैठे हों और हम सभी बोलें कि 'महावीर भगवान के असीम जय जयकार हो', तो वह भगवान की कीर्तनभक्ति करते हैं। यानी ये बोलने से वे खुद जिस रूप हैं उस रूप बना देते हैं! अभी यहाँ कहाँ महावीर हैं? लेकिन ऐसे ही महावीर को मैंने देखा हैं, दादा भगवान! वैसे ही वीतराग, संपूर्ण वीतराग, तीन सौ साठ डिग्री के वीतराग! और उनके जय जयकार मैं भी बोलता हूँ और आपसे भी बोलने के लिए कहता हूँ। वे देह सहित भगवान थे और यह देह अलग है, मंदिर अलग है और साहब अलग! लेकिन फल वही का वही है, प्रत्यक्ष भगवान मिलें हों, उनके जितना ही फल है यह!

दादा कीर्तन में रंग गए, वह दादा हो जाएँगे

ये पुस्तकें-आप्तवाणी जब प्रकाशित होगी तब लोग पढ़ेंगे और जानेंगे कि ये दादा अद्‌भुत हैं! इस तरह दादा का नाम लेंगे, वह उनकी कीर्तनभक्ति होगी। क्योंकि इस जगत् में कीर्तन करने योग्य पुरुष होते ही नहीं। और यदि उनका कीर्तन किया, तब तो कल्याण हो गया। कीर्तन यानी रंग लग जाता है। कीर्तन करते-करते, दादा, दादा करते, 'दादा' हो जाते हैं।

मूल पुरुष की मौलिक अनन्य भक्ति

यह तो अक्रम विज्ञान है, इसलिए 'दादा' की अनन्य भक्ति अपने आप रहती है। वर्ना अनन्य भक्ति इस काल में होती ही नहीं न! अनन्य भक्ति करने के लिए योग्य व्यक्ति होते ही नहीं हैं और अनन्य भक्ति करने वाला भी कोई जन्मा नहीं है इस काल में। लेकिन यह तो अक्रम विज्ञान है इसलिए सभी को अनन्य भक्ति का लाभ मिला है।

यानी ये जो 'दादा' की भक्ति सभी करते हैं, वे अनन्य करते हैं। बाकी किसी भी जगह पर अनन्य भक्ति हुए बगैर मनुष्य का छुटकारा नहीं है। वे ही, अन्य नहीं, भीतर अन्य कोई भी न आए। और यह तो अनन्य शरण है यहाँ पर, अनन्य की भक्ति है। यहाँ मूल पुरुष की भक्ति है। यह तो मौलिक चीज़ है।

अनन्य भक्ति होगी तो होगा छुटकारा

जब तक इस दुनिया में अनन्यता नहीं आ जाती, तब तक वह व्यक्ति कुछ भी नहीं कमाता। यानी यह आपको समझ में आता है, 'अनन्य' शब्द समझ में आया आपको?

प्रश्नकर्ता : समर्पण, शरणागति!

दादाश्री : समर्पण और शरणागति और सब, अनन्यता। जो देह के मालिक नहीं हैं उनके साथ यदि आप अनन्यता रखोगे, तो पूरी दुनिया का मानो या पूरे ब्रह्मांड का सबकुछ मिल गया, सत्ता मिल गई।

प्रश्नकर्ता : अनन्यता कही न आपने, अर्थात् क्या?

दादाश्री : अनन्यता चाहिए। यह विज्ञान सुना नहीं है, श्रवण ही नहीं किया है। जगत् ने देखा ही नहीं है यह विज्ञान। अत: जब तक अनन्यता उत्पन्न नहीं होगी, तब तक आपको पूरा फल नहीं मिलेगा।

जैसे कि घर में स्त्री होती हैं न वह अनन्यता से, सब को यों करती है, सभी का विवेक रखती है लेकिन अनन्यता अर्थात् क्या? कि मेरे पति के अलावा दूसरा पति नहीं, तभी उसका सब काम सफल होता है, वर्ना सफल ही कैसे होगा? इसीलिए कृष्ण भगवान ने गोपियों से कहा हैं न, 'अनन्य भक्ति चाहिए'। क्या कहते हैं?

प्रश्नकर्ता : अनन्य भक्ति चाहिए।

दादाश्री : अनन्य भक्ति अर्थात् अन्य कोई भी चीज़ उसे याद ही न आए। घर वगैरह, पत्नी-बच्चे-पति कुछ भी याद ही न आए अर्थात् अनन्यता।

प्रश्नकर्ता : यह जो आप कहते हैं न, कृष्ण ने अर्जुन से कहा था, 'सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज'।

दादाश्री : 'बस, अनन्य में आ जा। तभी तेरा छुटकारा है, वर्ना छुटकारा कैसे होगा?' कहते हैं। यदि तूने मुक्त पुरुष को ढूँढ लिया है तो फिर तेरा छुटकारा हो जाएगा। खुद नर में से नारायण हुए हैं, फिर वहाँ पूछने का रहा ही क्या?

अनन्य भक्ति के बगैर कभी भी काम सफल नहीं हो सकता। अब, इन कोरी स्लेट (पाटी) वालों की तो अनन्य भक्ति है ही, जो चित्रण की हुई स्लेट वाले हैं, उन्हें झंझट है। कोरी स्लेट वालों को तो झंझट ही नहीं है। भाई, लिखा ही नहीं था, तो अब क्या? और थोड़े बहुत अंक लिखे थे, वे मिटा दिए। अत: फिर हम उन्हें सावधान करते हैं। इसलिए कृष्ण भगवान ने लिखा है न, अनन्य प्रेम।

अनन्यता ही करवाएगी पूर्णाहुति

प्रश्नकर्ता : 'जिनकी आज्ञा का पालन करना है' उनके लिए अनन्यता होनी चाहिए', यह समझाइए।

दादाश्री : जिनकी आज्ञा का पालन करना है, उनके प्रति अनन्यता आनी चाहिए। आपको और कुछ नहीं करना है। आपने अनन्यता रखी तो फिर आगे बढ़ पाओगे। यह तो पानी के (बहाव के) बीच में इतना पत्थर का टुकड़ा पड़ा हुआ है, उसे हटाने की ज़रूरत है। बस, और कुछ नहीं। उससे पानी तेजी से बहने लगेगा।

अनन्यता अर्थात् जिनसे हमने पटंतर (आत्मसाक्षात्कार) प्राप्त किया हो, पटंतर या कुछ विशेषता का अनुभव किया हो तो फिर वहाँ अनन्यता रखनी है। और यदि अनुभव नहीं हुआ है तो वहाँ पर अनन्यता रहेगी ही नहीं। यानी अनन्यता रखी न, उसके साथ ही इस पत्ते को हटाने की ज़रूरत है। और आप जैसे को तो देर ही नहीं लगेगी। आप जैसे को तो, एक पत्ते को हटाते ही, यदि एक ही दिन पत्ता हटा दोगे न, तो आपको अनुभव हो जाएगा।

जिनके प्रति अनन्य श्रद्धा होती है, उस रूप खुद हो जाते हैं लेकिन अनन्य श्रद्धा रहना, बहुत मुश्किल चीज़ है।

खुद अपनी भक्ति, वहाँ आनंद बरते

अब यहाँ पर, यह जो रास्ता है न, यह अक्रम विज्ञान, वह क्या कहना चाहता है कि खुद, खुद की सँभालो। और 'दादा भगवान को मैं नमस्कार करता हूँ' ऐसा जितनी बार बोलते हो, वह आपके भीतर वाले दादा के लिए ही बोलते हो। ये सब, जगत् में जो बोलते हैं न, उसमें क्या होता है कि मुझे आपका नाम बोलना पड़ता है। अरे भाई, मुझे किसलिए आपका नाम लेना पड़े? और यह तो दादा का और उसका एक ही। यहाँ आरती उतारते हो, वह आपके भीतर वाले दादा की ही आरती उतारते हो। यह आपको ही स्पर्श करती है, यह बात। वैसे तो दिखने में लोगों को ऐसा लगता है कि यह दादा की भक्ति है। नहीं, ऐसा नहीं है, हर एक जीव को स्पर्श करती है। यह व्यक्त मार्ग है। खुद, अपना व्यक्त हो रहा है, निरंतर व्यक्त हो रहा है।

जिन्हें पता नहीं है कि अपने यहाँ खुद अपनी ही कीर्तनभक्ति करते हैं, उन्हें तो फिर नुकसान ही होगा न! यह जानने के बाद नुकसान मत होने दो। यहाँ जो भक्ति करते हैं, वह मेरे लिए, 'ए.एम.पटेल' के लिए नहीं है, 'दादा भगवान' की है। और 'दादा' तो सभी में बैठे हैं, मुझ अकेले में नहीं बैठे हैं। वे आप में भी बैठे हैं, ये उनकी ही भक्ति है। यह आरती वगैरह सब उनका ही है और इसीलिए यहाँ पर सभी को आनंद आता है।

प्रश्नकर्ता : उस घड़ी सब आनंद में आ जाते हैं, उसका कारण क्या है?

दादाश्री : क्योंकि ये 'दादा' यदि देहधारी रूप में होते न, तब तो मन में ऐसा होता कि खुद अपना ही गाना गाते रहते हैं। वास्तव में यह वैसा नहीं है। कृष्ण भगवान ने गीता में इसी तरह गाया है। परंतु लोगों को समझ में नहीं आता न। 'तू' ही कृष्ण भगवान है, लेकिन जब तक स्वरूप का भान नहीं हुआ हो, तब तक यह किस तरह समझ में आएगा?

प्रत्यक्ष की कीर्तनभक्ति से, खुद उस रूप होता है

अपने यहाँ सभी क्रिया खुद की अपनी ही हैं। किसी और के लिए नहीं है। 'दादा भगवान को नमस्कार करता हूँ', बोलते हैं, 'असीम जय जयकार हो', बोलते हैं, उस समय भीतर आपका आत्मा व्यक्त नहीं होता?

प्रश्नकर्ता : होता है न।

दादाश्री : उसका कारण है कि यह खुद अपना है। सभी में दादा बैठे हुए हैं और उन्हीं दादा की खुद भक्ति करता रहता है। ये पद बोलते हैं, वह खुद की अपनी कीर्तनभक्ति है। समझ में आ जाए तो काम निकाल दे, ऐसा है। इसलिए हम कहते रहते हैं कि यह खुद अपना ही है। सुनने वाला भी खुद का सत्संग करता है और बोलने वाला भी खुद का सत्संग करता है। बोलो, इसमें दूसरों के लिए ये कुछ भी नहीं करते। यह विज्ञान इस प्रकार का है कि किसी व्यक्ति को दूसरों के लिए करने की ज़रूरत नहीं है। अपने आप खुद अपने लिए ही कर रहे हैं!

दादा का इसमें कुछ नहीं है। खुद का अपना हर एक का है, प्रकट होना। यहाँ पर सारी जो कुछ भी क्रियाएँ हैं, वे 'खुद' अपनी ही क्रिया कर रहे हैं। 'दादा भगवान' वे भी उनके अंदर रहे हैं, वही भगवान, उन्हें ही प्रकट कर रहे हैं!

जय सच्चिदानंद

आत्मज्ञानी पूज्य नीरूमाँ और पूज्य दीपकभाई के आशीर्वाद प्राप्त आप्तपुत्रों के सत्संग कार्यक्रम

तमिलनाडु

कोयंबतूर	**दिनांक : 5-6 दिसम्बर**	**संपर्क : 9894042340**
तिरुचिरापल्ली	**दिनांक : 7 दिसम्बर**	**संपर्क : 9043844599**
मदुरै	**दिनांक : 8 दिसम्बर**	**संपर्क : 9344100111**
चेन्नई	**दिनांक : 10 दिसम्बर**	**संपर्क : 7200740000**
ताम्ब्रम	**दिनांक : 11 दिसम्बर**	**संपर्क : 7200740000**

आंध्रप्रदेश

विशाखापट्नम	**दिनांक : 12-13 दिसम्बर**	**संपर्क : 8639230069**

तेलंगाना

हैदराबाद	**दिनांक : 15-17 दिसम्बर**	**संपर्क : 9885058771**

मध्य प्रदेश

भोपाल	**दिनांक : 8-9 दिसम्बर**	**संपर्क : 9826926444**
इंदौर	**दिनांक : 10 और 13 दिसम्बर**	**संपर्क : 9229500845**
अंजड़	**दिनांक : 11 दिसम्बर**	**संपर्क : 9617153253**
खरगोन	**दिनांक : 12 दिसम्बर**	**संपर्क : 9425643302**

समय और स्थल की जानकारी के दिए गए नंबर पर संपर्क करे।

पूज्य नीरूमाँ / पूज्य दीपकभाई को देखिए टी.वी. चैनल पर...

भारत

- **'साधना'** पर हर रोज़ सुबह 7-50 से 8-15 तथा रात 9-30 से 9-55 (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन उत्तरप्रदेश'** पर हर रोज़ दोपहर 3 से 4 (हिन्दी में)
- **'आस्था'** पर हर रोज़ रात 10 से 10-20 (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन सह्याद्रि'** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-45 (मराठी में)
- **'दूरदर्शन सह्याद्रि'** पर हर रोज़ दोपहर 3-30 से 4 सोम से शुक्र और 11-30 से 12 शनि-रवि (मराठी में)
- **'आस्था कन्नड़ा'** पर हर रोज़ दोपहर 12 से 12-30 तथा शाम 4-30 से 5 (कन्नड़ा में)
- **'दूरदर्शन चंदना'** पर हर रोज़ शाम 6-30 से 7 (कन्नड़ा में)
- **'धर्म संदेश'** चैनल पर हर रोज़ सुबह 2-50 से 3-50, दोपहर 2-30 से 3 तथा रात 8 से 9
- **'दूरदर्शन गिरनार'** पर रोज़ सुबह 7-30 से 8-30, रात 9 से 10
- **'वालम'** पर हर रोज़ शाम 6 से 6-30 (सिर्फ गुजरात राज्य में)

त्रिमंदिरो के संपर्क : अडालज : 9328661166-77, **राजकोट :** 9924343478, **भूज :** 9924345588, **मुंबई :** 9323528901, **अंजार :** 9924346622, **मोरबी :** 9924341188, **सुरेन्द्रनगर :** 9737048322, **अमरेली :** 9924344460, **वडोदरा :** 9574001557, **गोधरा :** 9723707738, **जामनगर :** 9924343687. **अन्य सेन्टरों के संपर्क : अहमदाबाद (दादा दर्शन) :** 9574001445, **वडोदरा (दादा मंदिर) :** 9924343335, **दिल्ली :** 9810098564, **बैंगलूर :** 9590979099, **कोलकता :** 9830080820
यु.एस.ए.-केनेडा: +1 877-505-3232, **यु.के.:** +44 330-111-3232, **ऑस्ट्रेलिया:** +61 402179706

अमरेली में परम पूज्य दादा भगवान का 116वाँ जन्मजयंती महोत्सव

22 नवम्बर (बुध)	शाम 7 से 10	– **महोत्सव शुभारंभ (सांस्कृतिक कार्यक्रम)** और **सत्संग**
23-24 नवम्बर (गुरु-शुक्र)	सुबह 10 से 12-30	– **पूज्यश्री सत्संग**
	शाम 4-30 से 7	– **पूज्यश्री सत्संग**
25 नवम्बर (शनि)	सुबह 10 से 12-30	– **पूज्यश्री सत्संग**
	शाम 3-30 से 7	– **ज्ञानविधि**
26 नवम्बर (रवि)	सुबह 8 से 1	– **जन्मजयंती के अवसर पर पूजन-दर्शन-भक्ति**
	शाम 5-30 से 8	– **जन्मजयंती के अवसर पर दर्शन**

स्थल : खारावाडी, लीलीया रोड़, त्रिमंदिर के पास, अमरेली (गुजरात). **संपर्क :** 9574329133

आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सानिध्य में सत्संग कार्यक्रम

पाटन

9 दिसम्बर (शनि) रात 7-30 से 10-30 – **सत्संग**

10 दिसम्बर (रवि) शाम 5 से 8-30 – **ज्ञानविधि**

11 दिसम्बर (सोम) रात 7-30 से 10-30 – **आप्तपुत्र सत्संग**

स्थल : पांजरापोल ग्राउन्ड, काल भैरव मंदिर रोड़, पाटन (उत्तर गुजरात). **संपर्क :** 9825870800

अहमदाबाद

15-16 दिसम्बर (शुक्र-शनि) रात 7-30 से 10-30 – **सत्संग**

17 दिसम्बर (रवि) शाम 5-30 से 9 – **ज्ञानविधि**

स्थल : म्युनिसिपल कोर्पोरेशन ग्राउन्ड, डी मार्ट के सामने, निकोल, अहमदाबाद. **संपर्क :** 9723055306

अडालज

23 से 30 दिसम्बर – आप्तवाणी 14 भाग-3 पर सत्संग पारायण (हिन्दी-अंग्रेजी में ट्रान्सलेशन उपलब्ध रहेगा।)

नोट : आप्तवाणी-14 भाग-3 गुजराती किताब के पेज नंबर 344 से वाचन होगा।

31 दिसम्बर – श्री सीमंधर स्वामी की छोटी प्रतिमाओं की प्राणप्रतिष्ठा

2 जनवरी – परम पूज्य दादाश्री की पुण्यतिथि पर विशेष कार्यक्रम

मुंबई

12-13 जनवरी (शुक्र-शनि) – **सत्संग** और **14 जनवरी** (रवि) – **ज्ञानविधि**

नोट : समय और स्थल की जानकारी अगले अंक में दी जाएगी.

भावनगर त्रिमंदिर प्राणप्रतिष्ठा महोत्सव

आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सांनिध्य में... दिनांक 16 से 18 फरवरी 2024

16 फरवरी (शुक्र) – **सत्संग** (स्थानिक महात्माओं और नए मुमुक्षुओं के लिए)

17 फरवरी (शनि) – **ज्ञानविधि और 18 फरवरी** (रवि) – **प्राणप्रतिष्ठा** तथा **प्रक्षाल-पूजन-दर्शन-आरती**

विशेष सूचना : प्राणप्रतिष्ठा कार्यक्रम केवल एक दिन का है, इसलिए रात्रि आवास की सुविधा उपलब्ध नहीं हो पाएगी. जो महात्मा-मुमुक्षु उसी दिन सीधे ही महोत्सव स्थल पर पहुँचेंगे, उनके लिए बाथरूम-टोइलेट की सुविधा स्थल पर रहेगी.

केन्या : शिविर - सत्संग - ज्ञानविधि : ता. 30 सितम्बर से 10 अक्तूबर 2023

अडालज : DMHT शिविर : ता. 14 - 15 अक्तूबर 2023

नवम्बर 2023
वर्ष-19 अंक-1
अखंड क्रमांक - 217

दादावाणी

Date Of Publication On 15th Of Every Month
RNI No. GUJHIN/2005/17258
Reg. No. G-GNR-348/2021-2023
Valid up to 31-12-2023
LPWP Licence No. PMG/NG/036/2021-2023
Valid up to 31-12-2023
Posted at Adalaj Post Office
on 15th of every month.

प्रत्यक्ष परमात्मा की कीर्तनभक्ति क्या वह फल नहीं देती?

'दादा भगवान के असीम जय जयकार हो' बोले न, तो वह जो दादा भगवान चौदह लोक के नाथ हैं, जो भीतर प्रकट हुए हैं, उन प्रत्यक्ष परमात्मा की कीर्तनभक्ति है। अत: यह ऐसा फल देती है कि बात मत पूछो! यानी 'दादा भगवान' की कीर्तनभक्ति वह सबसे बड़ी भक्ति है। अनंत जन्मों से हृदय में जो घाव पड़े हैं, उन घावों को भरने का कोई रास्ता ही नहीं है। यह एक ही वाक्य ऐसा है कि घाव भरते हैं। 'दादा भगवान के असीम जय जयकार हो' बोलने से भीतर हृदय के सभी घाव भरते रहते हैं। कोई (उल्टा) बोले तो पत्थर जैसा घाव लगता है या नहीं लगता? इसलिए जब ये सभी घाव भर जाएँगे तब मोक्ष होगा, यों ही मोक्ष नहीं हो सकता। 'यह' (कीर्तनभक्ति) बोलते रहोगे न, तो सभी घाव भर जाएँगे।

- दादाश्री

Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation - Owner.
Printed at Amba Multiprint, Opp. H B Kapadiya New High School, Chhatral - Pratappura Road,
At - Chhatral, Tal : Kalol, Dist. Gandhinagar – 382729.